

श्री घीतरगाय नम

३७

पैंतीस बोल

तथा

शिखामणादि संग्रह ।

— > * < —

समाह्व—मुनि देवविजय ।

पू. शामनमन्नाट्टसुरिचक्रचक्रवर्ति जगद्गुरु तीर्थप्रभा-
वनैकबद्धलक्ष्य तपागच्छाधिपति प्रातःस्मरणीय
आचार्यमहाराजश्री श्री श्रीमद् विजयनेमि-
सूरीश्वरजीमहाराज के पट्टालकार शास्त्र-
विशारद व्याख्यान-वाचस्पति कपिरत्न
आचार्य विजयअमृतसूरीश्वरजी
महाराज के शिष्यरत्न मुनि
देवविजय के उपदेशसे

द्रव्यसहायक तथा प्रकाशक

शेठ अभयराजजी शिवरक्षजी फोचर

घीर स २४००] एकल ५०० [विक्रम स २०००

मूल्य अमूल्य उत्सवग्रहण

मुद्रक -शाह गुलाबचंद लखतुभाद, श्री महोदय प्री प्रेस-भावनगर

ब्रह्म अत्यन्त सराहनीय है। आप धनात्थ होते हुए भी निरामि-
मानी है। आपकी प्रकृति सरल एवं दयान्वित है। आपके एक
कर्म कलकत्ते में बहादुरमल अभयराजजी नामसे कार्य सम्पन्न कर
रहे हैं। आपने वि० स० १९९८ में आश्विन शुक्ल चतुर्दशी को
ज्याख्यानवाचस्पति परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विनयलब्धिसूरी
शरजी महाराज सहाय के सदुपदेश से "उपधानतप" कराया था,
और उस तप की पूर्णाहुति के समय आपने तप करनेवालों को
चाँदी की रकानी की प्रभावना की थी। यहाँ पर कोचरों की
दादावाडी में रु० ५०१ आपने मगान्त किया है। इस प्रकार
आपने दान-पुण्यादि अनेक सुकृत्यों द्वारा अपनी लक्ष्मी का
सदुपयोग किया है और करते हैं। अब आपके चार सुशील एवं
धर्मरूचि मन्तान (तीन सुपुत्र) इस प्रकार हैं। भँवरलालजी
आणदमलजी, और दूलीचन्दजी हैं। अन्त में आपके सुपुत्र भी
आपके गुणों का अनुकरण कर पुण्योपाजन लक्ष्मी का सद्व्यय
करके महान् पुण्य के भागी बनेंगे ऐसी हम आशा रखते हैं।

(२) श्रीमान् सेठ शिवबक्षजी कोचर का संक्षिप्त जीवन

आपका जन्म वि० स० १९४३ में श्रावण कृष्णा त्रयोदशी
को हुआ। आपके पिताजी का नाम हस्तमलनी था। वे स्वर्गीय
सेठ वादरमलजी के छोटे भाई थे। आपको शिक्षा पर पूरा प्रेम
है तथा धार्मिक विषयों में भी आप पूर्ण उत्साह से भाग लेते
हैं। आपकी वृत्ति उदार तथा सरल है। आपका रहनसहन सादे
एवं अनुकरणीय है। जिस समय श्रीमान् सेठ अभयरामजी
सहाय कोचरने, 'उपधान' तप कराया था उस समय आपने भी

उपधान तप करनेवाले महानुभावों को चांदी की रक्षाधी और चांदी की कटोरी की प्रभावना थी थी। इस प्रकार आप अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय अनेक सुट्टियों में और सुपात्र में समय पर क्रिया करते हैं। आपने इस पुस्तक को प्रकाशित करने में जो आर्थिक सहायता दी है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

आपका एक फर्म मेघराज सम्पतलाल के नाम से कलकत्ते में चलना है। वहा आप अपना व्यापारिक कार्य भी सुचारु रूप से कर रहे हैं। अब आपके तीन सुपुत्र एवं एक सुपुत्री हैं जिनके नाम मेघराजजी, सम्पतलालजी और जसलालजी हैं। वे भी विनया एवं धार्मिक भावनावाले हैं।

अन्त में हमारी यही अभिलाषा है कि जिस प्रकार आप अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय ज्ञान-प्रचारार्थ एवं दान-पुण्यादि सुकृत्यों में किया करते हैं इस से भी अधिकाधिक करते रहेंगे। “ सुज्ञेपु किम् बहुना ”।

मास्तर रामचन्द्र तथा पूनमचन्द्र कोचरने प्रेसकोपी की तत्फल करने लिए जो अमूल्य सहायता दी है अतः उनको धन्यवाद है।

वि स २०००
(ज्ञानपत्रमी)
सा २-११-४३

निवेदकः
श्री सधसेयक,
सालगी आत्माराम बोधलदास
(पाठननिवासी)
धर्माध्यापक,
श्री जे एस आर, बिकानेर.

विषयसूची

	पृ०	सू०
पात्रीश बोल	१०	३३
शिखामण बोल	३४	४१
सामायिक लेने की विधि	४२	४६
सामायिक पारने की विधि	४६	४९
गुरुवदन विधि	४९	५०
देवदर्शन विधि	५१	५९
प्रतिमाविचार	५९	६१
आगमोक्त प्रतिमा	६१	६३
विधि की जरूरत	६३	६५
जिन चैत्यवदन	६५	
आदीश्वर भगवान के स्तवन	६५	
महावीर स्तुति	६६	
सूतकविचार	६६	६९
अस्वाध्याय दिवस	६९	
प्रभश्रेणि	७०	७२
मत्रो	७२	७३
मनुष्यभवनी दुर्लभता	७३	७८
सज्जायो स्तवनादिसग्रह	७८	९०



॥ ॐ अहम् नम ॥

॥ श्री गुरुनिजयनमिसूरीश्वरभ्यो नमः ॥

॥ श्री पांत्रीश बोल का थोकड़ा

तथा

शिखामणादि संग्रह ॥



(१) पहले बोले गति चार

१ नरक गति, २ तिर्यच गति, ३ मनुष्य गति, ४ देव गति ।

(२) दूसरा बोले जाति पांच

एकेन्द्रिय जाति, वेङ्गन्द्रिय जाति, तेङ्गन्द्रिय जाति, चौरेन्द्रिय जाति, पचेन्द्रिय जाति ।

(३) तीसरे बोले काय छ ६

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय,
वनस्पतिकाय, त्रसकाय ।

(४) चौथे बोले इन्द्रिय पांच

श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसे-
न्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय ।

(५) पांचमे बोले पर्याप्ति ६

आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियप-
र्याप्ति, श्वासोश्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और
मनपर्याप्ति ।

(६) छठे बोले प्राण दश

पाच इन्द्रिय, तथा मनबल, वचनबल,
कायबल ये ३ बल, एव ये आठ, तथा नवमा
श्वासोश्वास और आयु ये दश प्राण जाणना ।

(७) सातमे बोले शरीर पांच

औदारिकशरीर, वैक्रियशरीर, आहारक-शरीर, तेजसशरीर तथा कार्मणशरीर ये पांच शरीर समझना ।

(८) आठमे बोले पन्द्रह योग

सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग तथा व्यवहार मनोयोग, ये मन के चार योग, तथा सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग, मिश्र वचनयोग और व्यवहार वचनयोग ये चार वचनयोग, औदारिक काययोग, मिश्र-काययोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रियमिश्र काययोग, आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग और कार्मण काययोग, ये सात काया के योग एव सब मिलाकर १५ योग जाणना ।

(९) नवमे बोले उपयोग बार

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन,

पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पाच ज्ञान तथा मति-
अज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभगअज्ञान, ए तीन
अज्ञान और चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि-
दर्शन और केवलदर्शन एव चार दर्शन मिल-
कर वार उपयोग जाणना ।

(१०) दशमे बोले कर्म आठ

ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म, वेद-
नीय कर्म, मोहनीय कर्म, आयु कर्म, नाम कर्म,
गोत्र कर्म अने अतराय कर्म ए आठ कर्म जाणना ।

(११) अगीयारमे बोले गुणस्थानक चौद

मिथ्यात्व गुणठाणु, सास्वादन गुणठाणु,
मिश्र गुणठाणु, अव्रतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणु,
देशविरति गुणठाणु, प्रमत्त गुणठाणु, अप्रमत्त
गुणठाणु, निवृत्तिवादर गुणठाणु, अनिवृत्ति-
वादर गुणठाणु, सूक्ष्मसपराय गुणठाणु, उप-
शातमोह गुणठाणु, क्षीणमोह गुणठाणु, सयोगी

केवली गुणठाणु और अयोगी केवली गुणठाणु,
एवं चौद गुणठाणा जाणना ।

(१२) वारमे वोले पंचइन्द्रिय का २३ विषय

जीवशब्द, अजीवशब्द और मिश्रशब्द—
ए त्रण विषय श्रोत्रेन्द्रिय का है और कालो, नीलो,
पीलो, रातो अने धोलो—ए पाच विषय चक्षु-
रिन्द्रिय का है और सुरभिगध अने दुरभिगध—
ए वे विषय घ्राणेन्द्रिय का है तथा कडवो,
कपायेलो, खाटो, मीठो अने तीखो—ए पांच
विषय रसेन्द्रिय का है तथा सुवालो, खरखरो,
हलवो, भारे, शीत, उष्ण, लूखो अने चोपड्यो—
ए आठ विषय स्पर्शेन्द्रिय का है एव सर्व मिल-
कर पाच इन्द्रिय का त्रेवीस विषय जाणना ।

(१३) तेरमे वोले दश प्रकारका मिथ्यात्व

जीवने अजीव करी जाणे तो मिथ्यात्व,
अजीवने जीव करी जाणे तो मिथ्यात्व, धर्मने

अधर्म करी जाणे तो मिथ्यात्व, अधर्मने धर्म करी जाणे तो मिथ्यात्व, साधुने असाधु करी जाणे तो मिथ्यात्व, असाधुने साधु करी जाणे तो मिथ्यात्व, सवरभावसेवनरूप मोक्षमार्ग, तेने उन्मार्ग करी सहहे ते मिथ्यात्व, विषयादि सेवनरूप उन्मार्ग तेने मोक्षमार्ग करी जाणे ते मिथ्यात्व, वायरा आदिक रूपी पदार्थने अरूपी करी सहहे ते मिथ्यात्व, मोक्षादिक अरूपी पदार्थने रूपी करी सहहे ते मिथ्यात्व—ए दश प्रकार का मिथ्यात्व जाणना ।

(१४) चौदमे बोले नव तत्त्वका जाणने के लीये एक सो ने पन्नर बोल जाणना

जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रवतत्त्व, सवरतत्त्व, निर्जरातत्त्व, वधतत्त्व, मोक्षतत्त्व, ए नव तत्त्व मे जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व जाणना योग्य है, पापतत्त्व, आश्रवतत्त्व, वधतत्त्व जाणने और छोडवा योग्य है, सवर-

तत्त्व, निर्जरातत्त्व, मोक्षतत्त्व, आदरवा योग्य है और पुण्यतत्त्व नैगमनय से आदरवा योग्य है, व्यवहार से जाणने योग्य है, निश्चयनय से छोड़ने योग्य है ॥ प्रथम जीवतत्त्व का बोल चौदह है ॥ प्रथम सुक्ष्म एकेन्द्रिय, दूसरा वादर एकेन्द्रिय, तीजा वेन्द्रिय, चौथा तेइन्द्रिय, पांचवा चौरेन्द्रिय छट्टा असन्नि पचेन्द्रिय, सातवाँ सन्निपचेन्द्रिय ये सात जाति के जीव हैं । वे जीव सात पर्याप्त और अपर्याप्त हैं । इस तरह दो दो भेद होने से जीव के चौदह भेद होते हैं ॥

दूसरे अजीव तत्त्व के चौदह बोल कहते हैं ॥ धर्मास्तिकाय का खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद तथा अधर्मास्ति काय का खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद तथा आकाशास्तिकाय के खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद और काल द्रव्य का एक भेद इस प्रकार दश भेद अरूपी अजीव के होते हैं । उससे

सहित पुद्गल का स्वध, देश, प्रदेश और परमाणु ये चार भेद रूपी कहलाते हैं—उन सब को मिलकर चौदह भेद अजीव तत्त्व के होते हैं ।

पुण्य नव प्रकार से वधता है । वे नव भेद लिखे जाते हैं—अन्नपुण्ये, पणपुण्ये, शेषपुण्ये, सेणपुण्ये, वच्छपुण्ये, मनपुण्ये, वयपुण्ये, कायपुण्ये, और नमस्कारपुण्ये—इस तरह नव प्रकार के पुण्यवध हैं ।

पाप अठार प्रकार से वधता है, वे लिखे जाते हैं—प्राणातिपात, मृषावाद, अटत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व—शक्य ये अगारह भेद हैं ।

आश्रव वीस प्रकार के हैं—१ मिथ्या-
त्वाश्रव, २ अव्रताश्रव, ३ प्रमादाश्रव, ४ कपा-

याश्रव, ५ योगाश्रव, ६ हिंसा करना यह प्राणातिपाताश्रव, ७ मृपावादाश्रव, चोरी करना यह ८ अदत्तादानाश्रव, ९ कुशीलाश्रव, १० परिग्रह रखना सो परिग्रहाश्रव, ११ श्रोत्रेंद्रिय-मोकली राखे सो श्रोत्रेंद्रियाश्रव, १२ चक्षुरिंद्रिय से मोकली राखे सो चक्षुरिंद्रियाश्रव, १३ घाणेन्द्रिय मोकली राखे सो घाणेन्द्रियाश्रव, १४ रसेन्द्रिय मोकली राखे सो रसेन्द्रियाश्रव, १५ स्पर्शेंद्रिय मोकली राखे सो स्पर्शेंद्रियाश्रव, उसी तरह मन आदि तीन को मोकला राखे सो १६ मनाश्रव, १७ वचनाश्रव और १८ कायाश्रव, १९ भंडोपगरण लेने और मूकने की अजघणा करे सो भंडोकरणाश्रव, २० शुचि कुसग सेवन करे सो कुसगाश्रव—इस प्रकार वीश भेद हुवे ।

सवर के वीश भेद है—१ समकितसंवर, २ व्रतपञ्चखाणसवर, ३ अप्रमादसंवर, ४ अक

पायसवर, ५ अयोगसवर, ६ प्राणातिपात-
 सवर, ७ मृपावाद न बोले सो सवर, ८
 अदत्त न ले वह सवर, ९ मैथुन न सेवे सो
 सवर, १० परिग्रह न रखे वह सवर, ११ श्रोत्रें-
 द्रिय को वश में रखे सो सवर, १२ चक्षुरिन्द्रिय
 को वश में रखे सो सवर, १३ घ्राणेन्द्रिय को
 वश मे रखे सो सवर, १४ रसेन्द्रिय को वश मे
 रखे सो मंवर, १५ स्पर्शेंद्रिय को वश मे रखे
 सो सवर, १६ मन वश रखे सो मन सवर,
 १७ वचन वश में रखे सो वचनसवर, १८
 काय वश करे सो कायसवर, १९ भडोपकरण
 की अजयणा न करे सो सवर, २० शुचिकुसग
 न सेवे सो सवर ॥

निर्जरा के १२ भेदे कहते है—१ अनशन
 २ वृत्तिसक्षेपतप,
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२

वृत्यतप, १० सज्ज्ञायतप, ११ ध्यानतप, १२
कायोत्सर्गतप इस प्रकार वारह हुवे ।

बंधतत्त्व के चार भेद कहेते हैं—प्रकृतिबंध,
स्थितिवध, अनुभागवध और प्रदेशवध इस
तरह चार बंधतत्त्व के भेद हुवे ।

(१५) पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ ८

१ द्रव्यात्मा, २ कषायात्मा, ३ योगात्मा,
४ उपयोगात्मा, ५ ज्ञानात्मा, ६ दर्शनात्मा,
७ चारित्रात्मा, ८ वीर्यात्मा, इस प्रकार आठ
आत्मा के भेद जाणना ।

(१६) सोलहवें बोले २४ दंडक

१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्ण-
कुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अशिकुमार, ६ द्वीप-
कुमार, ७ दिशाकुमार, ८ उदधिकुमार, ९
स्तनितकुमार, १० वायुकुमार ए दश भुवनपति
के दंडक हुवे ऐसा जाणना, तथा सात नारकी

के एक दडक तथा पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउ-काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय ये पांच स्थावर के पांच दडक तथा वेडन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय ये तीन विफलेन्द्रिय के तीन दडक ये औगणीस हुवे तथा वीशवाँ तिर्यच-पंचेन्द्रिय का, एकवीशवाँ मनुष्य का, बावीशवाँ व्यन्तरिक देवता का, तेवीशवाँ ज्योतिपी देवता का तथा चोवीशवाँ वैमानिक देवता का इस तरह चोवीश दडक हुवे ऐसा जाणना ।

(१७) सतरवें बोले लेश्या ६

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या पद्मलेश्या, और शुक्ललेश्या । इस प्रकार लेश्या छ जाणना ।

(१८) अठारवें बोले दृष्टि तीन

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यात्वदृष्टि, ओर मिश्र-दृष्टि ये तीन दृष्टि जाणना ।

(१९) उन्नीसवें बोले ध्यान चार

आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और
शुक्लध्यान ये चार ध्यान जाणना ।

(२०) बीसवें बोले पद्द्रव्य का
जाणपणा का तीस बोल.

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आका-
शास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय,
काल । धर्मास्तिकाय का पांच बोल जाणिये-द्रव्य
से एक द्रव्य, क्षेत्र से चौद राजलोक प्रमाण,
काल से आदि अत रहित, भाव से अरूपी वर्ण
नहीं, रस नहीं, गन्ध नहीं, स्पर्श नहीं, गुण से
जीव पुद्गल को चलने सहायता देनेवाला ये
पांच बोल धर्मास्तिकार्य के हैं ।

अधर्मास्तिकाय द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र
से चौदह राजलोक प्रमाण, काल से अनादि

अनत, भाव से अरूपी और गुण से स्थिर रहने पर सहायता देनेवाला ये पाच बोल जाणना ।

आकाशास्तिकाय-द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से लोकालोकप्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से अरूपी तथा गुण से अवकाश देनेवाला-ये पाच बोल जाणना ।

कालद्रव्य द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से अटीद्वीपप्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से अरूपी, गुण से वर्तना लक्षण ये पाच बोल जाणना ।

पुद्गलास्तिकाय द्रव्य से अनत द्रव्य, क्षेत्र से चौदह राजलोक प्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से रूपी तथा गुण से पूरण, गलन सडन, पडन नाश होना ये लक्षण यह पाच बोल जाणना ।

जीवास्तिकाय-द्रव्य से अनताद्रव्य, क्षेत्र से चौदह राजलोकप्रमाण, काल से अनादि

अनत, भाव से अरूपी तथा गुण से चेतन गुण लक्षण ये पाच बोल जाणना । इस प्रकार सर्व मिलाकर तीस बोल समझीए ।

(२१) इक्कीसवें बोले जीवराशी, अजीवराशी

इक्कीसवे बोले राशी दो—जीवराशी, अजीवराशी । जीवराशी के ५६३ भेद हैं । अजीवराशी के रूपी अरूपी ५६० भेद होते हैं । नारकी के भेद १४ नाम और गोत्र रत्नप्रभादि । तिर्यच का अडतालीस भेद—जलचर, थलचर, खेचर, गर्भज, समुर्च्छिम पर्याप्ता, अपर्याप्ता । पृथ्वीकाय के दो भेद—सूक्ष्म और वादर । सूक्ष्म किसे कहते हैं, तमाम लोक में काजल की कोटडी समान भरा है, जलाने पर जले नहीं, मारने पर मरे नहीं इसमे पर्याप्ता और अपर्याप्ता जाणना । पृथ्वीकाय वादर के दो भेद—पर्याप्ता और अपर्याप्ता । अप्काय के चार भेद—सूक्ष्म,

वाटर, पर्याप्ता और अपर्याप्ता । तेजकाय के चार भेद, वायुकाय के चार भेद, ये दोनों के सूक्ष्म, वाटर, पर्याप्ता और अपर्याप्ता । वनस्पतिकाय के ६ भेद—सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक ये तीन के पर्याप्ता और अपर्याप्ता सर्व मिलकर २२ भेद होते हैं । वेङ्गिन्द्रिय २, तेङ्गिन्द्रिय २, चौरिन्द्रिय २, पर्याप्ता और अपर्याप्ता हरेक ये सर्व मिलकर ६ भेद होते हैं । पचेन्द्रिय के २० भेद— १ जलचर, २ थलचर, ३ खेचर, ४ उरपरिसर्प, ५ भुजपरिसर्प ये पाच सन्नि और पाच असन्नि ये दश पर्याप्ता और दश अपर्याप्ता ये सब मिल कर २० भेद होते हैं, तथा सब मिलाकर तिर्यच के ४८ भेद होते हैं ।

मनुष्य के ३०३ भेद होते हैं—१५ कर्म-भूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अन्तर्द्वीप गर्भज और समुच्छिम । १०१ पर्याप्ता, १०१ अपर्याप्ता, १०१ समुच्छिम सर्व भेद ३०३ होते हैं ।

देवताओं के १९८ भेद—१० भुवनपति, १५ पर-
धामी, ८ व्यन्तर, ८ वाणाव्यन्तर, १० तिर्यच-
जृभक, १० ज्योतिपी, १२ देवलोक, ३ किल-
विपक, ९ लोकान्तिक, ९ त्रैवयक, ५ अनुत्तर-
ये ९९ भेद पर्याप्ता और अपर्याप्ता गिनने पर
१९८ भेद होते हैं ।

अब अजीव राशि के भेद कहते हैं—
अधर्मास्तिकाय आदि के रूपी, अरूपी ।
अरूपी के ३० भेद, रूपी के ५३० भेद होते हैं
सर्व मिलाकर अजीवराशि के ५६० भेद गुरुगम
से जाणना ।

(२२) वाईसवें बोले श्रावक के वारह व्रत

१ पहले व्रत में त्रस जीव को मारे नहीं
और स्थावर जीव की रक्षा करे, २ दुसरे व्रत में
पाँच बडा झूठ बोलना नहीं, ३ तीसरे व्रत से
वडी चोरी करे नहीं, ४ चौथे व्रत में पुरुष के

लिये परस्त्री और वेश्या आदि का त्याग, और अपनी स्त्री की मर्यादा करे। स्त्री के लिये परपुरुष का सर्वथा त्याग, अपने पति में सन्तोष रखना, ५ पाँचवें व्रत में धन, धान्य, परिग्रह की मर्यादा करे, ६ छठे व्रत में दिशा की मर्यादा करे, ७ सातवें व्रत पन्द्रह कर्मादान की मर्यादा करे, ८ आठवें व्रत अनर्थदण्ड का त्याग करना। जिस क्रिया करने से कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं होता, केवल पाप ही लगता है, जैसे रास्ते चलते हुवे पशु को मारना, नदी, तालाव आदि में स्नान करने का लोगों को प्रेरणा करना, इत्यादि पापोपदेशों को अनर्थदण्ड कहते हैं। ९ नवमे व्रत में ४८ मिनिट परिमाण सामायिक करना, १० दशवे व्रत में देशावकाशिक व्रत में, कम से कम दो तीन सामायिक करे, छठे व्रत में रखे हुए दिशा परिणाम का सकोच करना, ११ ग्यारवें व्रत में पोषध करना, १२

वारवें व्रत में अतिथि शुद्ध आहार साधु को दान देना, उनके अभाव में स्वधर्मीवात्सल्य करना ।

(२३) तेईसवें बोले साधुओं का पाँच महाव्रत कहते हैं ।

१ प्रथम महाव्रत में साधुजी महाराज जीव की हिसा करते नहीं, कराते नहीं और करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से । २ दूसरे महाव्रत में साधुजी महाराज असत्य भाषण करते नहीं, कराते नहीं, करते हुवे को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से । ३ तृतीय महाव्रत में साधुजी महाराज चोरी करते नहीं, कराते नहीं, करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से । ४ चतुर्थ महाव्रत में साधुजी महाराज स्त्रीसंग करने नहीं, कराते नहीं, करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से । ५ पच महाव्रत में साधुजी महाराज परिग्रह रखते

नहीं, रखवाते नहीं और रखते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से ।

महाव्रत किस को कहते हैं ?—हिंसा, झूठ बोलना, चोरी करना, अब्रह्मचर्य, परिग्रह रखना, इन पाचों को तीन करण, तीन योग से सर्वथा त्याग करनेरूप सर्वविरति को महाव्रत कहते हैं ।

अब पाच महाव्रत का भागा कहते हैं । प्रथम महाव्रत का ८१ भागा होता है—१ पृथ्वीकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं और मारते को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, १ अप्काय को हणे नहीं, हणावे नहीं, हणनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, १ तेउकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, १ वायुकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, १ वनस्पतिकाय

को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ वेदन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नहीं और मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ तेजन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ चौरिन्द्रिय को मारे नहीं मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं मन, वचन काया से । ९ पचेन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन वचन काया से ।

बीजा मृपावाद विरमणव्रत का भागा ३६—
 ९ क्रोध के आवेश से असत्य बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ हास्य से झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ भयसे

झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से ।
 ९ लोभसे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं । मन, वचन, काया से ।

तीसरा अदत्तादन विरमणव्रत का भाग
 ५४-९ अल्प चोरी करे नहीं, करावे नहीं करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ घणी वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ नानी (छोटी, थोड़ी) चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ बड़ी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ सचित्त वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन,

काया से । ९ अचित्त वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से ।

चौथा मैथुन विरमण व्रत का भांगा २७—
 ९ देवता की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ मनुष्य की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ तिर्यच की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से ।

पाचवाँ परिग्रह विरमण व्रत के ५४ भांगा—
 ९ अल्प परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन काया से । ९ ज्यादा परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ थोड़ा परिग्रह

राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ मोटा परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ सचित्त वस्तु का परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ अचित्त वस्तु का परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । इस प्रकार पंच महाव्रत के सब मिलाकर २५२ भागा हुआ ।

(२४) चौबीसमें बोले व्रत का ४९ भागा ॥

प्रथम एक करण ने एक योग से नव भागा होता है, सो कहते हैं—१ मन से करे नहीं, २ वचन से करे नहीं, ३ काया से करे नहीं, ४ मन से करावे नहीं, ५ वचन से करा-

वे नहीं, ६ काया से करावे नहीं, ७ मन से अनुमोदे नहीं, ८ वचन से अनुमोदे नहीं, ९ काया से अनुमोदे नहीं ।

एक करण के दो योग से नव भँगा होता है, सो कहते हैं—१ मन और वचन से करे नहीं, २ मन और काया से करे नहीं, ३ वचन और काया से करे नहीं, ४ मन और वचन से करावे नहीं, ५ मन और काया से करावे नहीं, ६ वचन और काया से करावे नहीं, ७ मन और वचन से अनुमोदे नहीं, ८ मन और काया से अनुमोदे नहीं, ९ वचन और काया से अनुमोदे नहीं ।

एक करण और तीन योग से नव भँगा होता है, सो कहते हैं—१ मन, वचन, काया से करे नहीं, २ मन, वचन, काया से करावे नहीं, ३ मन, वचन, काया से अनुमोदे नहीं, ।

वे (दो) करण और एक योग से नव

भांगा होता हूँ -१ मन से करे नहीं, करावे नहीं, २ वचन से करे नहीं, करावे नहीं, ३ काया से करे नहीं, करावे नहीं, ४ मन से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ५ वचन से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ६ काया से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ७ मन से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, ८ वचन से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, ९ काया से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं ।

दो करण और दो योग से नव भागा होता हूँ -१ करे नहीं, करावे नहीं, मन से और वचन से, २ करे नहीं, करावे नहीं, मन से और काया से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, वचन से और काया से, ४ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन से, ५ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काया से, ६ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से और काया से, ७ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन

से, ८ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काया से, ९ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से और काया से ।

दो करण और तीन योग से तीन भांगा (३) होता है:—१ करु नहीं, करावे नहीं, मन से, वचन से और काया से, २ करुँ नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से, वचन से, और काया से, ३ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से, वचन से, काया से ।

तीन करण और एक योग से तीन भांगा (३) होता है —१ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से, २ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, काया से ।

तीन करण और दो योग से तीन भांगा होता है—१ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन से, २ करे नहीं,

करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काय से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं वचन और काया से ।

तीन करण और तीन योग से एक भाग होता है.—१ मन से, वचन से, काया से, करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं ।

सर्व मिलाकर नीचे प्रमाणे होते हैं—एक करण और एक योग से नव, एक करण और दो योग से नव, एक करण और तीन योग से नव, दो करण और एक योग से नव, दो करण और दो योग से नव, दो करण और तीन योग से तीन, तीन करण और एक योग से तीन, तीन करण, दो योग से तीन, तीन करण, दो योग से एक याने ४९ भाँगा होता है ।

(२५) पच्चीसवें बोल्ले पांच चारित्र [५]

१ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनी

चारित्र, ३ परिहारविशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म-
सपराय चारित्र, ५ यथाख्यात चारित्र ।

(२६) छवीसवें बोले नय सात [७] :

१ नैगमनय, २ सग्रहनय, ३ व्यवहा-
रनय, ४ ऋजुसूत्रनय, ५ शब्दनय, ६ सम-
भिरूढनय, ७ एवभूतनय ।

(२७) सत्तावीसमें बोले चार निक्षेप [४]

१ नामनिक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, ३ द्रव्य-
निक्षेप, ४ भावनिक्षेप ।

(२८) अठावीसवें बोले पांच समकित [५]

१ उपशम समकित, २ क्षयोपशम सम-
कित, ३ क्षायिक समकित, ४ सास्त्रादन सम-
कित, ५ वेदक समकित ।

(२९) उन्नतीसवें बोले नव रस [९]

१ श्रृंगाररस, २ वीररस, ३ करुणरस, ४

हास्यरस ५ रौद्ररस, ६ भयानकरस, ७ अद्भुतरस, ८ विभत्सरस, ९ शातरस ।

(३०) त्रीश्वे वोले वावीश अभक्ष्य [२२]

१ बडका पीपु, २ पीपलका पीपु, ३ ऊँवर का फल, ४ पिपरी पीपु, ५ कटुवर का फल, ६ शहद, ७ माखण, ८ मास, ९ मदिरा १० ११ विप ते (अफीण), सोमल प्रमुख, १२ करहा (ओला), १३ सर्व जाति की कच्ची मिट्टी, १४ रात्रिभोजन, १५ बहुबीज फल, १६ अनतकाय कदमूल फल, १७ बोलानु अथाणु, १८ काचां गोरसमा करेला बडा, १९ वेगण रिंगणा, २० जेनु नाम न जाणता होइए एवा अजाण्या फल, फूल, २१ तुच्छ फल ते चणीया वोर तथा कुअली वस्तु, अत्यत काचा फल, तथा पीलूडा, पीचु प्रमुख, २२ चलित रस, ते मडेल्लु अन्नादिक जेनो काल पूरो थयाथी स्वाद बदल्यो होय, चलित रस थई गया होय ।

(३१) एकत्रीश में बोले चार अनुयोग [४]

१ द्रव्यानुयोग, २ गणितानुयोग, ३ चरण-
करणानुयोग, ४ धर्मकथानुयोग ।

(३२) वतीस में बोले तीन तत्त्व [३]

१ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व ।

(३३) तेतीस में बोले पांच समवाय [५]

१ काल, २ स्वभाव, ३ नियति, ४ पूर्व-
कृत कर्म, ५ पुरुषकार ते उद्यम ।

(३४) चौतीस में बोले चार प्रकार का पाखंडीयो

१ एक क्रियावादी का एकसो अस्ती भेद
(१८०), २ दूसरा अक्रियावादी का चौरासी
भेद (८४), ३ तीसरा विनयवादी का वत्तीस
भेद (३२), ४ अज्ञानवादी का सडसठ भेद

(६७) इस प्रकार सब मिलकर ३६३ भेद होते हैं, सो सूयगडागसूत्र से जानना ।

(३५) पैतीस में बोले श्रावक का २१ गुण

१ क्षुद्र बुद्धि का न होय पण गभीर होय,
 २ पचेन्द्रिय स्पष्ट होय, रूपवत होय याने सर्व
 अगोपाग पूर्ण होय, ३ सौम्य प्रकृतिवाला होय,
 स्वभावे अपापकर्मी होय, ४ सदाचारी होय,
 सर्व लोक को ब्रह्म (प्रिय) होय, प्रशसा
 करने योग्य होय, ५ सकृष्ट परिणाम से रहित
 होय, क्रूर चित्तवाला न होय, ६ इम लोक,
 परलोक के अपाय से डरे, और अपयश से डरे,
 ७ अशठ होय, दूसरे को ठगे नहीं, ८ दाक्षि-
 ण्यवालो होय, दूसरे की प्रार्थना को भग करे
 नहीं, ९ स्वकूलादिकनी लज्जावालो होय, अ-
 कार्य वर्जनीय होय, १० दयावत होय, ११
 सौम्य दृष्टिवालो होय, १२ गुणी मनुष्यों का
 पक्षपाती होय, १३ भली धर्मकथा का उपदेश

देनेवाला होय, १४ सुशीलादि अनुकूल परिवारयुक्त होय, १५ ऊंचा विचारवाला, दीर्घदर्शी होय, १६ पक्षपात रहित, गुणदोषविशेष को जाणे, १७ वृद्ध पुरुष, जो परिपक्व बुद्धिवाला होय, उसकी सेवा करनेवाला और अनुयायी-पणे चलनेवाला होय, १८ गुणी पुरुष का विनय करनेवाला होय, १९ किया हुआ उपकार का जाननेवाला होय, २० निर्लोभी हो कर अपनी स्वेच्छा से उपकार करे, २१ लब्धलक्ष से वह धर्मानुष्ठान व्यवहार का लक्ष प्राप्त हुआ हो,— यह एकवीश गुण जिसमें होय वह प्राणी धर्म-रूप रत्न को प्राप्त करने योग्य होय । इति ॥



॥ अथ शिखामण का १९२ बोल ॥



१ कोई पण शुभ कार्य करता निलम्ब करना नहीं, २ मतलब बिना झगारा करना नहीं, ३ ज्ञानी हो क्ररके गर्व करना नहीं, ४ चनता सुधी क्षमा अवश्य धारण करनी, ५ घर की गुप्त बात किसी को कहना नहीं, ६ स्त्री और पुत्र की घूरी बात कहना नहीं, ७ मित्र से कोई प्रकार का भेद रखना नहीं, ८ घूरे मित्र का विश्वास करे नहीं, ९ प्रेम रखनेवाली स्त्री का विश्वास कर नहीं, १० कोई भी कार्य करते बरत विचार करना, ११ माता पिता और गुरु तथा बड़े पुरुषों का विनय करे, १२ स्त्री को गुप्त बात कह नहीं, १३ पेट भराय इतने भोजन में सन्तोष रखना, १४ विद्या पढने में मन्तोष रखे नहीं, १५ दान देते बरत धराना नहीं, १६ तपस्या करने में पिठे हटे नहीं, १७ ग्रहण की हुई प्रतिज्ञा का भग करे नहीं, १८ अन्याय से द्रव्य उपार्जन करे नहीं, १९ शरीर की ताकत विचारे बिना युद्ध करे नहीं, २० दुःख के समय में धैर्य को छोड़े नहीं, २१ घूरे कार्य से दूर रहना, २२ बगुले के माफिक इन्द्रिय को बश में रखे, २३ बुकडे की माफिक प्रभाते सच से पहले उठना, २४ शरीर से आलस्य को दूर करना,

२५ निद्रा में सचेत रहना, २६ मन चित्ते काम को पूरा किये
 विना किसी को कहे नहीं, २७ सामरे के अन्दर चतुराई
 धारण करनी और मूर्खाई तजनी, २८ गुण लेने में प्रयत्न
 करना, २९ नीच मनुष्य से भी उत्तम विद्या लेनी, ३०
 बरोबर के साथ प्रीति करनी, ३१ क्लेश के स्थान पर मौन-
 पणा धारण करना, ३२ बड़े के साथ पैर करना नहीं,
 ३३ लेने देने में, भोजन में, विद्या पढ़ने में, व्यवहार में
 और वैद्य के मामले लज्जा करनी नहीं, ३४ क्लेश के स्थान में
 खड़ा नहीं रहना, ३५ अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी,
 और शास्त्र की पुस्तक पर पैर (पग) नहीं लगाना, ३६ घी,
 तेल, दही, दूध, आदि खुल्ले (उघाडा) रखे नहीं, ३७
 वैद्य, गुरु, राजा, नदी, व्यवहारी (वाणीयो) ये पाँचों
 जहाँ पर न हो वहाँ पर उमना नहीं, ३८ नीच से मित्राद
 करे नहीं, ३९ जिमसे जीव को जोखम होना होवे तो वह
 धन का त्याग करना, ४० शत्रु के उपर निर्दयता करना
 नहीं, ४१ मूर्ख, कायर, अमिमानी, अन्यायी और दुष्ट
 इतने को स्वामी करना नहीं, ४२ मूर्ख को हितोपदेश दना
 नहीं, ४३ परस्त्री का मदद त्याग करना, ४४ इन्द्रियों को
 हमेशा वश में रखना, ४५ मूर्ख से मित्रता करनी नहीं, ४६
 लोमी को द्रव्य से वश करना, ४७ शक्ति होते हुवे भी
 आशा को भग करना नहीं, ४८ गुण विना मात्र आडम्बर
 से रीझवें नहीं, ४९ राजा खुश होवे तो पण विश्वास करना

नहीं, ५० एक अक्षर शिखानेवाले को भी गुरु मानना, ५१ पानी छाँण करक और देख कर पीना, ५२ प्राणान्त होने पर भी मृत्यु को छोखना नहीं, ५३ अपना अयगुण शोधी काढ़ना, ६४ राजा की स्त्री, गुरु की स्त्री, मित्र की स्त्री, सासू और अपनी माता इन पाँचों को माता ममझना, ५५ कार्य और मत्कार विना किसी के घर जाना नहीं, ५६ वचन में दारिद्र्यपणा रखना नहीं, ५७ लेखण (कलम), पुस्तक और स्त्री इन तीनों को किसी को देना नहीं, ५८ आमदानी देख कर खच करना, ५९ हरेक विद्या मुखपाठ रखनी, ६० स्वामी प्रमत्त होने पर गर्वित होना नहीं, ६१ करियारणु देखे बिना हाथ दना नहीं, ६२ अस्त्र बाँधनेवाले तथा बाह्यण को उधार दना नहीं, ६३ नट, बटलेल, वेश्या तथा जुगारी को उधार दना नहीं, ६४ गुप्त धन ढना तो हुशियारी से पक्का बन्दोबस्त करना, ६५ दो चार साक्षी राख्या बिना धन देना नहीं, ६६ उधार लाया हुआ धन मुदत पहले ढ देना, ६७ घर में पैसा होवे तो कर्जा करना नहीं, ६८ दना होय तो देने में उद्यम रखना, ६९ प्रीतिवत के साथ प्रायः लेना देना करना नहीं, ६० चोरी की हुई वस्तु अगर मुफ्त मिले तो भी लेनी नहीं, ७१ दुराचारी को भागीदार बनाना नहीं, ७२ लाघण करना नहीं, ७३ खात्रीदार को किल्लीदार (खजानची) करना, ७४ लिया होय तथा दीया होय तो लिखने में आलस्य नहीं करना, ७५ नये नये गुमास्ता तथा

मुनीम करना नहीं, ७६ जाति के साथ नम्रता रखनी, ७७
 स्त्री को मीठा वचन से बोलना, ७८ शत्रु के पेट में घुस कर
 वश करना, ७९ मित्र के पाम मी साक्षी विना थापण
 (अनामत) रखनी नहीं, ८० एक दो बड़े आदमियों से
 जान पहिचान जरूर करनी, ८१ जहाँ तक बने किसी की
 गवाह नहीं भरनी, ८२ परदेश में रेफी वस्तु (नशीली
 वस्तु) सेवन करनी नहीं, ८३ उत्सव छोड़ कर, गुरु और
 पिता को अपमान कर के, लड़के को रोया कर के, हत्या
 कर के, तयार हुआ भोजन निभ्रदी (छोड़ कर), रोता
 हुआ सुन कर, मैथुन कर के, ऊलटी कर के, नचीक आये
 हुए पर्व को तिरस्कार कर के (अशुणी), दूध का भोजन
 कर के इतना वाना (जोग) कर के आत्महितैषी को
 परदेश जाना नहीं, ८४ जिन घर में कोई आदमी न होय
 वहाँ पर नहीं जाना, ८५ कारण विना अपने धन की
 आशा न करना, ८६ परदेश में आडवर धारण करना, ८७
 किसी की बात किसी को कहना नहीं, ८८ माता पिता
 की आज्ञा को भग करना नहीं, ८९ मातापिता की सेवा
 चाकरी सचे मन से करना, ९० गुरु और माता पिता का
 हररोज पग दवाना, ९१ माता पिता के सामने श्रुठ
 बोलना नहीं, ९२ माता पिता के धार्मिक मनोरथों को पूरा
 करना, ९३ बड़े भाई को पिता समान ज्ञानना, ९४ भाई
 की घूरी दशा को दूर करना, और कुमार्ग से बचना,
 ९५ रोग में, दुष्काल में (घूरे प्रखत), शत्रु के

राजदरबार में, इतनी जगह भाई की मदद करना, ९६ कोई भी उच्चम काम में भाई को भूलना नहीं, ९७ नाटक, कौतुक, घण्टे जनों में स्त्री को जाने देना नहीं, ९८ स्त्री से भली प्रकार सेवा कराना, ९९ स्त्री को रात में बाहर जाने देना नहीं, १०० स्त्री क्रोध में हो तो उसको मनवा लेना चाहिए, १०१ स्त्री को घर के काम में द्रव्य देकर बर्तना, १०२ उत्सव के दिन मगासबधी को भूलना नहीं, १०३ दुःखी, सगा, सबंधियों की महायता करना, १०४ संबन्धी (बुडुर्गी) से कदापि विरोध करना नहीं, १०५ जिस घर में एकली स्त्री हो उस घर में जाना नहीं, १०६ धर्म के काम में मगा सबंधियों को जुटाना, १०७ उवासी करते, छोक, डकार लेते मुख दयाना नहीं, १०८ उल्टा व सीवा मोना नहीं, १०९ भोजन करते छोक आवे तो पानी पीना, ११० खड़े खड़े पैशाच करना नहीं, १११ खड़े खड़े पानी पीना नहीं, ११२ मोते समय छाती पर हाथ रखना नहीं, ११३ कन्या अच्छे वश (कुल) में देना, दुःखी वश में न देना, ११४ कन्या का द्रव्य लेना नहीं, ११५ कन्या

मुँह अपनी बड़ाई करना नहीं, १२२ बलवान होते हुए भी
 निरुद्यमी होना नहीं, १२३ रुपटी के आढम्बर का विश्वास
 न करना, १२४ गई वस्तु का शोक न करना, १२५ शत्रु
 होय तो भी उसके मरण समय म्मशान जाना, १२६ शूर-
 वीर हो कर, निर्बल को दुःख देना नहीं, १२७ अति आपदा
 (कष्ट) पड़ने पर आत्मघात करना नहीं, १२८ हँसी करते
 किसी का मर्म प्रकाशना नहीं, १२९ हँसी करते किसी पर
 क्रोध करना नहीं, १३० दो आदमी विचार करते हो वहाँ
 नहीं जाना, १३१ मुखिया (पच) इनकार करे, उस काम
 को करना नहीं, १३२ खराब काम कर के खुशी न होना,
 १३३ तपस्या करते समा धारण करना, १३४ पढ़े हुवे
 शास्त्र को हरसोज सभालते हुए रहना, १३५ पुरुषों को रात्रि
 में दर्पण देखना नहीं, १३६ शयन, मैथुन, निद्रा, आहार ये
 सन्ध्या समय वर्जना, १३७ रोटी देना पण ओटलो (स्थान)
 देना नहीं, १३८ मद्य से जाणपिछाण रखना, १३९ भोजन
 कर के एक प्रहर पूरा न हुना उस समय तक फिर भोजन
 करना नहीं, दो प्रहर होने पर फिर भोजन कर लेना, दो प्रहर
 पूरा हो जाने पर भूखा रहना नहीं, १४० स्त्री की प्रशंसा
 उसके मरण बाद करना, १४१ राजा, देव, गुरु के पाम
 खाली हाथ जाना नहीं, १४२ निर्लज स्त्री से हँमी न
 करना, १४३ शुभ कार्य में विर्लज न करना, १४४ धूप से
 आकर तुरत पाणी पीना नहीं, १४५ आधी रात में उचे
 स्वर (अनाज) से भेद की बातें कहना नहीं, १४६ भोजन

के बीच में और आसीर म जल पीना, १४७ अजीर्ण होने पर एक दो टक भोजन न करना, १४८ गुशी के समय दुख की घाते छोड़ देनी, १४९ कोई क्रोध के आवेश से कठोर वचन कह, तो भी न्याय मार्ग को छोड़ना नहीं, १५० माता, पिता, गुरु, श्रेष्ठ, स्वामी, राजा, इन की निंदा करना नहीं, १५१ मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलिन, धर्मनिन्दक, कुशीलीओ, लोमी और चोर, इनकी सगति कर्मी भी करना नहीं, १५२ अनजान आदमी की बढ़ाई करना नहीं, १५३ अनजान आदमी को अपने घर म न रखना, १५४ अनजान कुल क माथ मगाई करना नहीं, १५५ अनजान आदमी को नौकर न रखना, १५६ अपने से बड़े पुरुष उपर कोप न करना, १५७ बड़े पुरुष क माथ केश नहीं करना, १५८ गुणी पुरुष क साथ वादविवाद न करना, १५९ दारिद्रता आ जाये तत्र प्रथम कम्माड के भाफिक इच्छा रखे बड़ मूर्ख, १६० अपने गुण का बग्वाण करे सो मूर्ख, १६१ कर्ज करके धर्म कर सो मूर्ख, १६२ उधार दिया हुआ धन न मांगे सो मूर्ख, १६३ अपने कुटुम्ब से विरोध और दुमरों से प्रीति कर सो मूर्ख, १६४ न्याय से धन उपार्जन करना, १६५ दश के विरुद्ध कोई कार्य न करना, १६६ राजा के दुश्मन के माथ सगति (सौबत) नहीं करनी, १६७ बहुत मनुष्या क माथ विरोध न करना, १६८ अच्छे पढ़ीसी के पाम रहना, १६९ दूमेरे का धर्म झूठा करना नहीं, १७० अपने पाम रहनेवाले की

भलाई (हित) करना, १७१ बुरा लेख लिखना नहीं,
 १७२ देव, गुरु के विषय में भक्ति रखना, १७३ दीन और
 अतिथि की बनें जबतक सेवा करनी, १७४ जो भाग्य में
 होगा वह मिलेगा एसा भरोसा करके उद्यम को छोड़ना
 नहीं, १७५ चोरी की वस्तु लेनी नहीं, १७६ अच्छी और
 बुरी वस्तु को मेली करके बेचना नहीं, १७७ आपत्ति काल
 निवाण करने के लिये राजा का आश्रय लेना, १७८ तप-
 स्त्री को, प्रिय को, मर्म को जाननेवाले को रमोई करनेवाले
 को मत्रादी को, बड़े पूजनीय को इतने को कोपाना नहीं,
 १७९ नीच की सेवा करनी नहीं, १८० मिश्रामघात करना
 नहीं, १८१ सर्व वस्तु का नाश होता होवे तो भी अपनी
 वाणी का पालन अवश्य करना, १८२ धर्मशास्त्र जाननेवाले
 के पाम बैठना, १८३ किसी की निन्दा नहीं करनी, १८४
 मार्ग में चलते पान न खाना, १८५ आसी सूपारी को दांत
 से तोड़ना नहीं, १८६ अपनी बात कहे अपनी बात पर ही
 हसे, जैसा तैसा बोले और इस लोक और परलोक के विरुद्ध
 काम करे वे मत्र मूर्खों के चिह्न हैं, १८७ उपद्रव के स्थान
 पर रहना नहीं, १८८ आबक देख कर खर्च करना, १८९
 द्रव्य के अनुसार वस्त्र पहनना, १९० लोक-निन्दित काम
 करना नहीं, १९१ खोटा तोल, खोटा माप रखना नहीं, १९२
 जेवर अढानगत राख्या विना रुपया पैसा देना नहीं ।

॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ सामायिक लेने की विधि ॥



प्रणम्य प्रणताशेषसुरासुरनरेश्वरम् ।

तत्त्वज्ञ तत्त्वदेष्टार महावीर जिनोत्तमम् ॥ १ ॥

श्रावक, श्राविका सामायिक लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर, चौकी(बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक और जपमाला(नमकारमाली) आदि रख कर, जमीन पुँज कर, आसन बिछा कर, चरवला और मुँहपत्ति लेकर बँठे। बैठ के बाँय हाथ में मुँहपत्ति मुख के आगे रख कर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुवे पुस्तक आदि की स्थापना के समुख कर के नमकारमत्र पढे ।

नमो अरिहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयरियाण ।
नमो उवज्झायाण । नमो लोए सबमाहूण । ऐमो पच
नमुक्कारो । सब पावप्पणासणो । भगलाण च सब्बेसि । पढम
हवइ भगल ॥ १ ॥

(ऐसे एक नमकार गिन कर)

पचटियसवरणे, तह नमविहवमचेरगुत्तिघरो । चउपिहक-
सायमुक्को, इअ अठारस गुणेहिं सजुत्तो ॥१॥ पच महवयजुत्तो,
पचपिहायार पालणसमत्थो, पचममिओ तिगुत्तो छत्तीस गुणो
गुरू मज्झ ॥ २ ॥

(ऐसे पंचदिय कहे, यदि प्रथम से आचार्य प्रमुग्ध की उस स्थान पर स्थापना की हुई हो तो पंचदिय नहीं कहना । (पीठे)

इच्छामि स्वमामेणो ! वदिउ जारणिजाए निसीहि-
ओए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण सदिंसई भगवन् ! इरियाइहिय पंडिक-
मामि ? इच्छ । इच्छामि पडिकमिउ, इरियाइहियाए, पिरा
हियाए गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
ओमा उत्तिंग पणगदंग मट्टी मकडासताणा सरुमणे, जे मे
जीवा विराहिया, एगिदिया, वेडदिया, तेडदिया, चउरिंदिया,
पचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेमिया, सघाइया, सघट्टिया,
परियापिया, किलामिया, उदिया, ठाणाओ ठाण सरुमिया,
जीवियाओ, ववरोपिया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेण,
विसल्लीकरणेण, पायाण, रुम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि
काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थं ऊमसिएण, नीससिएण, खामिएण, छीएण,
जभाइएण, उडुएण, चायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्टिसचालेहिं, एवमाइएहिं आंगारेहिं अभग्गो अपिराहिओ
हुंअ मे काउस्सग्गो । जाव अरिहेताणं भगवताण, नमुक्कोरेण न
पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेण ज्ञाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते
 कित्तइस्स, चउवीस पि केउली ॥ १ ॥ उसभमजिअ च वद,
 सभवमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण च
 चदप्पह वद ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, मीअल-सिज्जम
 वासुपुञ्ज च । विमलमणत्त च विण, धम्म सत्तिं च वदामि
 ॥ ३ ॥ कुयु अर च मल्लिं, वद मुणिसुव्वय नमिजिण च ।
 वदामि रिट्ठनेमिं, पास तइ वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एउ मए
 अभिपुआ, विहुयरयमला पहीणजरमणा । चउवीस पि
 जिणउरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्थिय वदिय
 महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवोहिलाभ,
 समाहिउरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चडेसु निम्मलयरा, आइचेसु
 अहिय पयामयरा । सागरवरगमीरा, मिद्धा मिद्धिं मम दिसतु ॥

(पीछे उमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जाउणिआए निसीहिआए
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सदिसह भगवन् ! सामायिक
 मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “ इच्छ ” ।

(ऐसे कह पर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जाउणिआए निसीहिआए,
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सदिसह भगवन् ! सामायिक

सन्निहाहूँ ? “ इच्छ ” । इच्छामि स्वमाममणो वदिउ जाव-
णिजाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह-
मह भगवन् ! सामायिङ्ग ठाउ ? “ इच्छ ” ।

(ऐसे कह कर दोनों हाथ जोड़ कर एक नवजार नीचे
मुचन गिनना)

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरिआण ।
नमो उवज्झायाण । नमो लोए सबमाहूण । एमो पच्च नमुक्कारो ।
सवपावप्पणासणो । भगलाण च भवेसिं । पढम हउड भगल ॥

(पीछे ‘ इच्छाकारि भगवन् ’ पसाय करी सामायिक षडह
धरावोजी ? ’ ऐसे बोल कर ‘ करेमि भते ’ स्वय उधरे, यदि
गुरु या बडील हो तो उधगये)

ऋगमि भत ! सामाडय, माउज्ज जोग पच्चक्खामि जाव
नियम पज्जुवामामि, दुग्घिह तिग्घिहेण मणेण वायाए काएण
न ऋगमि न ऊरवमि तस्म भते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

(पीछे)

इच्छामि स्वमासमणो वदिउ जावणिजाए निमीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! वेसण्णे
सदिसाहूँ ? “ इच्छ ” इच्छामि स्वमाममणो वदिउ जावणि-
जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह
भगवन् ! वेसणे ठाउ ? “ इच्छ ” इच्छामि स्वमासमणो

वदिउ जावणिजाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि ॥ इच्छा
 कारेण सदिसइ भगवन् ! मज्झाय सदिमाहुँ ? “ इच्छ ”
 इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिजाए निसीहिआए
 मत्थएण वदामि । इच्छाकारण सदिमह भगवन् ! सज्झाय
 करु ? “ इच्छ ” ॥

(ऐसे कह कर हाथ जोड़ करतीन नवकार गुणना)

॥ इति सामायिक विधि-लेने की सम्पूर्ण ॥

नोट—सामायिक में स्वाध्याय व नवकारवाली फेरना,
 विकथा को त्याग देना ।



अथ सामायिक पारने की विधि ।



इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिजाए निमीहिआए
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! इरिया-
 वहिय पडिक्कमामि इच्छ । इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहि-
 याए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, धीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
 ओसा उत्तिग, पणग दग मट्टी मक्कडा सताणा सकमणे, जे
 मे जीवा विराहिआ एगिंदिया, वेइदिया, तेइदिया, चउ-
 रिंदिया, पचिंदिया, अमिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाडया,
 सघट्टिया, परियापिया, किलामिया उद्विया ठाणाओठाण
 सकामिया, जीवियाओ ववरोपिया तस्त मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहि-
रणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण, निग्घायणट्ठाए,
मि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊमसिएण, नीमसिएण, खासिएण, छीएण,
वमाइएण उडुएण वायनिसग्गेण भमलिए, पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहि, सुहुमेहिं खेलसचालेहि, सुहुमेहिं
देहिसत्तालेहिं, एवमाइएहि आगारेहिं अभग्गो अपि-
हाहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण, भगवताण,
नमुक्कारेण, न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण ज्ञाणेण
प्रप्पाण त्रोसिरामि ।

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना,
काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना) ।

लोगस्म उज्जोअगरे, घम्मत्तित्थयरे जिणे । अरिहते
कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥ १ ॥ उमभमजिअ च वदे,
सभवममिणदण च सुमई च । पउमप्पह सुपास, जिण च
चदप्पह वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, सीअलमिअसवा-
सुपुज्ज च । विमलमण त च जिण, घम्म सत्ति च वदामि
॥ ३ ॥ कुव अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च । वदा-
मि सिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एउ मए अभि-
शुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा
त्तित्थयरागे पसियत्त ॥ ५ ॥

लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गयोहिलाभ, समाहिवरमु-
त्तम दितु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहिअ पया
सयरा । सागरररगम्भीरा, मिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमाममणो वदिउ जाणणिजाए निसीहिआए,
मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! मुहपत्ति
पडिलेहु ? ।

(ऐसे कह कर मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे रामासमण देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ, जाणणिजाए निसीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! मामायिअ
पारमि ? ' यथाशक्ति ' इच्छामि खमाममणो वदिउ जाव-
णिजाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदि-
सह भगवन् ! मामायिअ पारिअ ' तहत्ति ' ।

(ऐसे कह कर दाहिने हाथको चरबले या आस र पर रख
कर, मस्तक झुका कर एक नवकार मंत्र पठ कर ' सामायि-
अवयजुत्तो ' सूत्र पढे)—

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण ,
नमो उवज्झायाण । नमो लोए सबसाहूण । ऐमो पच नमु-
कारो । सबपाउप्पणासणो । मगलाण च सबेसिं । पढम हवइ
मगल ॥

समाइअ वयजुत्तो, जाण मणे होई नियमसजुत्तो । छि-
न्नइ असुइ कम्म, सामाइअ जत्तिआचारा ॥ १ ॥ सामाइ

अभिउ करे, ममणो इय मायओ हयइ जम्हा । एएण कार-
णण, बहुसो सामाडअ कुञ्जा ॥ २ ॥ मने ममायिक विधिसे
लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमे जो कोई अविधि हुई हो
तो मिच्छामि दुक्कड ।

दम मन के, दम पचन के, चारह काया के ये कुल
बचीम दोपो मे से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति सामायिक पारने की विधि समाप्ता ॥



॥ अथ गुरुवंदन विधि ॥

गुरु महाराज क सामने खड़े हो कर पाचों अंगों
(शिर १, हाथ २, पाव २) को नमाकर तीनवार “ खमा-
समणा ” दना ।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि समाममणो ! उदिउ जायणिञ्जाए निसीहिआए
मत्थएण वदामि ।

(इतना कह कर खड़े हो कर गुरु सन्मुख दोनों हाथ
जोड़ कर “ इच्छकार सुहराइ ” का पाठ कहना)

॥ अथ इच्छकार सुहराइ ॥

इच्छकार सुहराइ (देवसि) सुख तप शरीर निराबाध,

सुखसज्जम जात्रा निर्ऱहो छो जी, स्वामी शता छे जी,
भातपाणी का लाभ देजो जी ।

(इतना कह कर गुरु के सामने रखे रखे ही ' अव्मु
द्विओ ' का पाठ पढ़ना)

॥ अथ “ अव्मुद्विउ ” ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! अव्मुद्विओमि अन्मितर
राइअ (द्रमिअ) खामेउ इच्छ खामेमि राइय (देवमिय)

(इतना कह कर शिर शुका के दाहिना हाथ भूमि पर
रख, बाया हाथ मुग्न के आगे रख कर घुटनों के बल बैठ
निम्नलिखित पाठ पढ़ना)

ज किं चि अपत्तिय परपत्तिय भक्ते पाणे विणए वेयाचच्चे
आलाव सलावे उच्चामणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए
ज किं चि मज्झ विणयपरिहीण सुहुम वा वायर वा तुमे
जाणह अह न जाणामि तस्म मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति गुरुवदन विधि ॥



देवदर्शन विधि



श्री मंदिरजी में देवदर्शन करने के लिये जाते समय सम्पूर्ण और स्वच्छ वस्त्र पहन कर उत्तरासन करके जाना चाहिये, क्योंकि प्रभु तो राजा और इन्द्रों से भी बड़े हैं इस लिये उनके सामने जैसे तैसे (अशुद्ध) वस्त्रों ममेत नहीं जाना चाहिये ।

मंदिर के पहले दरवाजे में प्रवेश करने ही पहिले निसिही (सामारिक मापद्व का छोटेने रूप) करनी चाहिये । इस समय अपने घरबार के कामों का मनमें विचार न होना चाहिये परन्तु यदि मंदिर का कोई काम हो तो उस पर ध्यान दे सकते हैं । और मंदिर में जहा कहीं कूड़ा कचरा जालीया दिराई दे उसे भी यत्ना-पूर्वक दूर कर सकते हो ।

जब प्रभु प्रतिमा दूर से ही नजर आने लग जाय तब दोनों हाथ जोडकर "नमो जिणाण" कहना चाहिये । फिर प्रभु की दाईं तरफ से उनकी तीन प्रदिक्षणा देनी चाहिये, जिससे हमारा समारमे बार बार आना जाना कम हो और स्तनत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र) की प्राप्ति हो । अर्थात् अपने अन्दर श्रद्धा, विवेक और सदाचार प्रगट हो ।

फिर जिम जगह भगवान बिराजमान हो उनक बीच के द्वारपर (मूल गम्भारे क पाग) पहुँच कर दूमरी 'निसिही' कहनी चाहिये, और प्रभु के सन्मुख खड़ा रहकर स्तुति करना।

अद्य मे सफल जन्म, अद्य मे सफला क्रिया,
अद्य मे सफल गात्र, जिनेन्द्र ! तत्र दर्शनात् ॥ १ ॥

ठे प्रतिमा मनोहारिणी, दु खहरी श्री गीर जिणदर्नी,
भक्तोने ठे मर्षदा सुखकारी, जाणे रीली चढनी ।
आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे,
पामी मधला सुख ते जगतमा, मुक्ति भणी जाय छे ॥१॥

जिनेश्वर भगवान की स्तुतिँँ रह भगवान का पूर्ण भाव से नमस्कार करना चाहिये । दूमरी निसिही करने से मंदिर सचधी कामकाज का त्याग होता है और दर्शन करने का काम आरम्भ होता है । दर्शन करते समय पुरुषों को प्रभु को दाई तरफ और स्त्रियों को बाई तरफ खड़े होना चाहिये । और वहाँ मीठे स्वर और शान्तचित्त से श्लोक या दोह आदि बोलकर प्रभु का गुण कीर्तन करना चाहिये । (इस प्रकार स्तुति करने क बाद धूपपूजा करनी चाहिये)

१ यदि पूजा करने के लिय जाओ तो मूल गम्भारे में प्रवेश करते दूमरी निसिही कहकर पूजा का काम आरम्भ कर दो ।

तत्पश्चात् चैत्यवदन करने के स्थान पर आकर उत्तरा-
सग से भूमि को तीन बार पूजकर, बैठकर पाट पर स्पृच्छ
शुद्ध चावलों से सुंदर माथिया करना चाहिये । पहिले
तान डेरियाँ करनी चाहियें और उसके नीचे माथिया
करना चाहिये । और उसके उपर सिद्धशिला तथा सिद्ध-
स्थान बनाने चाहिये । जैसे:—



माथिया और सिद्ध स्थान पर नैवेद्य (पताशे, पेडे
आदि) तथा फल (सुपागी, नारियल आदि) चढ़ान चाहिये ।
नैवेद्य और फल अच्छे होने चाहिये । क्योंकि भगवान के
आगे जो कुछ भी चढ़ाया जाय वह सब शुद्ध और अच्छी
वस्तु होनी चाहिये । माथिया करके उम पर दृष्टि रख कर
दोनों हाथ जोड़ कर प्रभु से यह प्रार्थना करनी चाहिये ।
“ हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्ररूप यह तीन रत्न
द कर और देव, मनुष्य, तिर्यच और नरक इन चार गतियों
से छुड़ा कर मुझे ऐसी शक्ति दीजिये जिस से मैं सिद्ध
स्थान को प्राप्त कर सकूँ ” पूजा करनेवाला पूजा कर के
पीछे उपरोक्त विधि करे और चैत्यवदन करे । फिर तीमरी
“ निमिही ” कह कर एक खमाममण दे कर डेरियावहिये

से प्रकट लोगस्त तक कहे । बाद में तीन खमासमण देकर
चैत्यवदन करना चाहिये । इम निसिही से दर्शन अधवा
पूजा करने के काम का त्याग होता है और चैत्यवदन का
आरम्भ होता है और मो नीचे प्रमाणे ।

इच्छाकारण सदिमह भगवन् ! चैत्यवदन करु इच्छ,

(श्री आदिनाथ प्रभु का चैत्यवदन)

आदि दन अलवेमरु, विनीतानो राय,
नाभिराय कुलमडणो, मस्टेवा माय १

पाँच स धनुपनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चौरासी लख पूर्वनु जम आयु पिशाल. २

वृषभ लछन चिन वृषभ धरु ऐ, उत्तम गुण मणिखान,
तम पद पद्म सेवनथकी, लहिण अविचल ठाण ३

इस के बाद,

ज किचि, नामतिथ, मग्गे पायाले माणुस लोए ।
जाइ जिणविचाई, ताई सवाइ चढामि ॥ १ ॥

॥ अथ नमुत्थण (शक्रस्तव)

नमुत्थुण अरिहताण भगवताण, आइगराण तित्थयराण
सथस बुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिमसीहाण पुरि
सवरपुडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण
लोगनाहाण लोगहिआण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण

॥ ४ ॥ अभयदयाण चक्रुदयाण मग्गदयाण सरणदयाण
रोहितयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण धम्मटेमयाण धम्मनायगाण
धम्ममारहीण धम्मपरचाउरतचक्रुदहीण ॥ ६ ॥ अप्पडि-
इयवरणाण, टमणधराण विअट्टुळुमाण ॥ ७ ॥ जिणाण
वावयाण विद्वाण वारयाण । बुद्धाण बोद्धयाण मुत्ताण मोअ-
गाण ॥ ८ ॥ सब्बन्नूण सब्बट्टरिणीण सिअमयलमरुअमणत-
मक्खयमवावाहमपुणरापित्ति सिद्धिगड नामवेप ठाण सप-
चाण नमो जिणाण जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अइआ
सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले । सपड अ उट्टुमाणा,
सबे तिप्पिहेण वदामि ॥ १० ॥

॥ जावति चेइआइ सूत्र ॥

जावति चेइआइ, उट्टे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।
सवाइ ताइ उदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥

(यह पाठ पढ़ने के बाद एक समाममण देना)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए, निसीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ (फिर)

॥ जावत केवि साहू सूत्र ॥

जावत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । मवेसि
तेसि पणओ, तिप्पिहेण तिदडविरयाण ॥

॥ पचपरमेष्ठि नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्तिद्धाचार्योपाध्यायसर्वमाधुम्य ॥

श्री आदिनाथ जिन स्तवन ॥

(मधुर स्वर में स्तवन कहना)

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी,
 प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति प्रतधारी ॥ज०॥१॥
 वरसीदान दय तुम जग म डलती इति निगारी,
 तैसी काही करतु नाही करुना, साहिब मेहर हमारी ॥ज०॥२॥
 मागत हम नही हाथी घोड़े, घन कन रुचन नारी,
 दीयो मोही चरनकमल की सेवा, याहि लगत मोही प्यारी ज०३
 भव लीला वासितसुर डारे, तु पर मब ही उवारी,
 म मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आज्ञा शिर धारी ॥ज०॥४॥
 एमो साहिब नही कोइ जग म, याख होय दिलदारी,
 दिल ही दलाल प्रेम के बिचे, तिहा हठ रींचे गमारी ॥ज०॥५॥
 तुम ही साहिब में दू बढा, या मत दाचो विनारी,
 श्री नयविजय विबुध सचक के, तुम हो परम उपकारी ॥ज०॥६॥

(पिछे दोनो हाथ जोड़ कर मस्तक पर लगा कर सम्पूर्ण
जय वीयराय कहना)

जय वीयराय जगगुरु! होउ मम तुह पभायओ भयव।
 भयनिवेओ मग्गा-पुमारिआ इट्टफलमिद्धि ॥ १ ॥

लोगनिरुद्धाओ, गुरुजण पूआ पग्थकरण च ।
सुहगुरुचोगो तवयणसेवणा आभवमखडा ॥ २ ॥

वारिज्ज जडपि नियाण-वधण गीयराय ! तुह ममए ।
तवपि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाण ॥ ३ ॥

दुखखओ कमखखओ ममाहिमरण च बोहिलाभो अ ।
सपज्जउ मह एअ, तुह नाह ! पणामकरणेण ॥ ४ ॥

मर्ममङ्गलमाङ्गल्य, मर्मकल्याणकारणम् ।
प्रधान मर्मवर्माणा, जैन जयति शाननम् ॥ ५ ॥

(पिछे राहे हो कर अरिहतचेईयाण रहना)

अरिहतचेइयाण, करेमि काउम्मग्ग, उदणउत्तियाए,
पूअणवत्तिआए, मकारउत्तिआए, मम्माणउत्तिआए, बोहिला-
भउत्तिआए, निरुउस्मग्गउत्तिआए, मद्धाए मेहाए, धिईए,
धारणाए, अनुपेहाए उड्डमाणिए ठामि काउम्मग्ग ।

अन्नत्थ ऊमसिएण, नीममिण्ण, खामिएण, ठीएण,
जभाईएण, उड्डूएण वायनिमग्गेण, ममलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठीसचालेहिं, एवमाएणहिं आगारेहिं, अमग्गो अग्गिगहिओ,
हुज्ज मे काउम्मग्गो जाव अरिहताण भगउताण नमुकारेण न
पारेमि ताउ काय ठाणेण भोणेण ज्ञाणेण अप्पाण बोमिरामि ॥

१ आभवमखडा वहे पिछे हाय जरा तीचे उतारना

एक नमस्कार का सात्त्विक भाव करना, एक गवकार का सात्त्विक भाव पार के पेंना बाटना,

नमोऽर्हतिगदाचार्योवाप्यायमवमापुम्य

(यह कह कर स्तुति करना)

श्री आदिनाथ जिन स्तुति

आदि त्रिनर राया, ज्ञान मोक्ष काया
महर्षी माया, धोरी नन्दन पाया ।
जगतस्थिति निषाया, शुद्ध चारित्र्य पाया,
कालमित्री राया, मोक्ष नगर निषाया ॥

पिंड समामरण कर, विष्टे यथाशक्ति पण्यगत करना नयनारसी । और भगवान् के सामने छोट की मांगनीय स्तुति करना ।

जैनाचार्य श्री विजयअमृतसरिस्त्रिरि रा मनिन्दा द्वात्रिंशत् उद्धृत,

समारूप भवाटपीमा मार्यगढ प्रभु तम,
मुक्तिपुरी आशातर्णा इच्छा अतिगण छ मन,
आश्रय कयों तेयी प्रभो तुन तोय अन्तर तन्दरो,
मुन रानत्रय लृष्ट विभो ! रथा करो रथा करो ॥१॥
कयारे प्रभो निज दहमां पण आप युद्धिन तजी,
अद्वाचले शुद्धि करल विवेकन चित्त मनु;

ममशत्रु मित्र विपे घनी न्यारो थई परभावथी,
रमीश सुखकर सयमे क्यारे प्रभो आनन्दथी ॥२॥

गतदोष गुणभडार जिनजी देज म्हारे तुज छे,
सुरनर सभामा वर्णव्यो जे धर्म म्हारे तेज छे,
एम जाणीने पण दामनी मत आप गजगणना करी,
आ नम्र म्हारी प्रार्थना स्वामी तमे चित्ते धरो ॥३॥

प्रतिमा विचार.

“ स्वान्तघ्नान्तमय मुख पिपमय दृग्धृम्नधागमथी ।
तेषा यैर्न नता स्तुता न भगवन्, मूर्तिर्न वा प्रेक्षिता ॥”

अर्थ — श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी महाराज
फरमाते हैं कि-जिमने भगवान् की मूर्ति को नमस्कार
किया नहीं, उसका हृदय अधकारमय है, जिमने स्तुति की
नहीं, उसका मुख जहरजाला है, जिमने उनका दर्शन किया
नहीं उसकी नजर धुँआ से भरी हुई है ।

प्रभु दर्शन यह धर्मक्रिया है, तथा आत्मोन्नति का
अमोघ शस्त्र है । जितनी क्रिया करे वह धर्मपूर्णक करे,
तथा इस प्रकार की क्रियाओं को धर्मक्रिया कहते हैं । इन
धर्मक्रियाओं में प्रभुदर्शन उत्तम क्रिया है, जहाँ क्रिया है
वहाँ फल है । उदासीनभाससे भगवान् के स्वरूप चिंतन की
दशा प्राप्त कर लेनेके बाद यदि

परमात्मा बनता है याने मोक्ष मिलता है । चैत्य शब्द का अर्थ —

चैत्यपदनतः सम्यक् शुभो भावः प्रजायते ।
तस्मात्कर्मक्षयः सर्वं तत कल्याणमश्नुते ॥

अर्थ — भली प्रकार चैत्य (प्रभु) पदन करने से शुभ मानाए पैदा होती है उससे (शुभभावनाओं से) सर्वथा कर्म का नाश होता है, और कल्याण (मोक्ष) मिलता है ।

चैत्य शब्द का अर्थ—लोक में जिनविषय अथवा जिन मंदिर होता है, परन्तु तो भी कई एक मनुष्य इसका अर्थ ज्ञान, मुनि और जन ऐसा करते हैं । व्याकरण में चित् धातु का अर्थ सज्ञा उत्पन्न करना (ऐसा) होता है । उसी पर से “ चैत्य ” शब्द बना है । जैसे लकड़ी आदि में प्रतिमा देखकर, यह अरिहत की प्रतिमा है ऐसा मान पैदा होता है । वातुषाठ में “चित्त” धातु से चैत्य बतलाया गया है । कौष आदि शब्द शास्त्र में भी आप यही “चित्” धातु से चैत्य शब्द पाया जाता है । नाममाला ग्रन्थ में “ चैत्य विहारे जिनमच्चनि ” चैत्य शब्द विहार और निनालय के लिए उपयोग में आता है । अमरकोश में भी “ चैत्यमाय तन प्रोक्त ” याने चैत्य शब्द का अर्थ सिद्धायतन, जिन-मंदिर ऐसा कहा है । कलिकालमें हमचन्द्राचार्य महाराज स्वयं अपनी बनायी हुई पुस्तक “ अनकार्थसंग्रह ” में

“ चैत्य जिनौक तद् विं चैत्यमुद्देश पादपः । ” चैत्य याने जिनमदिर, जिनविं और यह वृक्ष कि जिनके नीचे तीर्थकर भगवान् को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है, इस तरह तीन अर्थ होते हैं, और आगमादि में भी यही अर्थ स्पष्ट-रूप से बतलाया गया है ।

आगमोक्त प्रतिमा ।

आगमादि में भी बहुत से चैत्य और जिनप्रतिमा के लिये प्रमाण मौजूद हैं, जैसे-स्थानागसूत्र ४, स्थानाध्ययन उद्देश २, सूत्र ३०७, समवायाग सूत्र ३५, भगवती सूत्र शतक ३, उद्देश २, सूत्र १४२ भगवती शतक ३, उद्देश २ सूत्र १४४, उपासकदशाग अध्ययन ७ सूत्र २, महाकल्प सूत्र, महानिशिथ अ ३, उववाइ सूत्र १, -४०, रायपसेणी सूत्र १३९, उत्तराध्ययन निशिथ अ० १०, गाथा २९१ इत्यादि बहुत से आगम सूत्र में प्रमाण मौजूद हैं । और बत्तीम सूत्र में भी जिन प्रतिमा का प्रमाण मौजूद है, इस लिये जो महानुभाव जिनप्रतिमा का निषेध करते हैं, उन्हीं को कदाग्रह को छोड़ करके जिनप्रतिमा का निषेध नहीं करना चाहिये, और मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास में प्रः ३९ से ११६ प्रकरण को पढ़ने की कोशिश करे और दुराग्रह छोड़े और बत्तीम सूत्र में माननेवाले निर्युक्ति, भाष्य आदि को नहीं मानते हैं और जिनके

कर्मी होता और जिनपूनादि क्रिया से इलुकर्मी होता है उम वास्ते धर्मक्रिया हमेशा करनी, और उमर्म भी वो क्रिया अपनी सर्व शक्ति से विधिपूर्वक करने का यत्न करना। शास्त्र में कहा है कि—“ विधियोग को धन्य है, और एम आराधक को भी धन्य है, तथा विधि का सम्मान करनेवाले को धन्य है, और विधि पक्ष को दूषण नहीं लगानेवाले का धन्य है। ” यह मत्र विदित है कि सगारिक कार्यों जैसे व्यवहार करना, भोजन करना, खेती करना, औपधी (त्राई) खाना आदि विधिपूर्वक करने से अच्छा फल मिलता है, तो फिर अरिहत भगवान की अपने महर्षियों प्रणीत शास्त्रानुसार पूजा करने से अवश्य उत्तम फल मिले, इसमें कौनसा आश्चर्य है ? जैसे सूर्यामदब, गरण, द्रौपदी आदिन प्रभुपूजा की ? यह शास्त्र सिद्ध है।

जो भणइ नत्वि घम्मो न च्चैर य ययाइ ।

सो समणसघवज्जो कायधो ममणसघण ॥ १ ॥

जिन चैत्यवदन

जेनाचार्यश्री विजयनदासूरि विरचित ।

भव्यानामिह भक्तिसक्तमनसा श्रेयो निधान वरम् ।

काम कल्पितकामनाचिकिरणे साक्षाद्धि कल्पद्रुमम् ॥

श्रीशत्रुञ्जयमुखपञ्चमदृश कालुष्यनिर्गोशनाम् ।

श्री कादम्बकतीर्थराजमनीश व्यायामि सन्मद्गलम् ॥ १ ॥

सम्प्राप्तो जिनसम्प्रतेर्गतचतुर्विंशस्य यत्राचले ।
 निर्वाण मुनिकोटिभि र्गणधरः श्रीमत्कदम्बाभिधः ॥
 श्रद्धाराधनतत्परैरुमनसा योऽचिन्त्यचिन्तामणिः ।
 श्रीकादम्बगिरिः शिव सत्तनुता प्रौढप्रभान्वितः ॥ २ ॥
 छाया वृक्ष सुरद्रुमाश्च निधयः सद्रत्नभूमिस्तथा ।
 प्रच्छन्नारसकूपिकाः सुवहवो दिव्यौषधीना व्रजाः ॥
 यस्मिन्नाखिलसिद्धयोऽपि मत्त खेलन्ति तोर्याचले ।
 सोऽय सिद्धिनिकेतन विजयते कादम्बरुस्तीर्थराट् ॥ ३ ॥

आदीश्वर भगवन् का स्तवन

माता मरुदेवीना नद !

देखी ताहरी मूरति मारु मन लोभाशुर्नी

करुणानागर करुणामागर, काया कचन गान्

धोरी लछन पाउले काई, धनुष पाचमें नाद-२२२ १

त्रिगडे बेसी धर्म कहता, सुणे पर्यदा वाग्;

योजनगामिनी वाणी मीठी, वरसती जल वा-२२२ २

उरवशी रूडी अपठरा ने, रामा ठे मन ग्

पाये नेउर रणझणे काई, करती न-२२२ ३

तुहि ब्रह्मा तुहि त्रिधाता, तु जग तार

तुज सरिखो नही देन जगतमा, अहवदिश-२२२ ४

तुंहि भ्राता तुहि त्राता, तुहि जगतनी देव,
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव-माता० ५
श्री सिद्धारथ तीरथकेरो, राजा ऋषभ जिणद,
कीर्ति कर भाणैकमुनि ताहरी, टालो भव भय फद-माता० ६

श्री महावीरस्वामिनी स्तुति

जय जय भवि हितकर धीर जिनेश्वर देव,
सुरनरनायक जेहनी सारे सेव ।
ऋरुणा रम कदो वदो आनद आणी,
त्रिशलासुत सुदर सुण मणिकेरो खाणी ॥ १ ॥



सूतक विचार ।

१ पुत्र का जन्म हो तो १० दिन का व पुत्री का जन्म हो तो
११ दिन का और रात्रि को जन्म हो तो १२ दिन का सूतक

२ घरह दिन तक घर के मनुष्यों को देवपूजन नहीं करना

३ अगर जूदा भोजन करत होयें तो दूसर के घर पार्न
से जिनपूजा कर सकते हैं और सुनावड करनवाली य
करानेवाली को तो नरकार भय भी नहीं गिनना ।

४ प्रमत्त करनेवाली स्त्री को १ मास तक जिनप्रतिमा व
दर्शन नहीं करना और ४० दिन तक जिनप्रतिमा को पूजन
नहीं करना और मुनिगणों को आहार भी न देना ।

५ घर के गोत्री को ५ दिन तक सूतक ।

६ व्यग्रहार भाष्य की मलयगिरिकृत टीका में जन्म का सूतक १० दिन का है ।

७ गाय, घोड़ी, उटणी, भेंम घर में प्रसवे तो २ दिन का और जंगल में प्रसवे तो १ दिन का सूतक ।

८ भेंम प्रसवे तो १५ दिन, गाय प्रसवे तो १० दिन, बकरी प्रसवे तो ८ दिन, उँटणी प्रसवे तो १० दिन के बाद दुध काम में लाना ।

९ दाम दासी का जिनका अपने ही आश्रय में जन्म हो और अपने मामने रहे हो तो २४ प्रहर का सूतक ममज्ञाना ।

ऋतुयती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार ॥

१ दिन ३ तक वर्तन आदि न ठुण, ४ दिन तक प्रतिक्रमणादि न करे परन्तु तपस्या करे तो मार्यक हो सकती है । पाच दिन बाद जिनपूजा करना । रोगादि कारणों से ३ दिन व्यतीत होने बाद रुधिर देखने में जाने तो उमका दोष नहीं । विवेक महित पति हो कर जिनप्रतिमा के दर्शन, अग्रपूजादि करे और माधुओं को गन्दना करे परन्तु चिनप्रतिमा की अग्रपूजा न करे ।

मृत्यु सम्बन्धी सूतक का विचार ॥

१ घर का कोई मनुष्य मर गया हो तो १२ दिन

सूतक, उसके घर साधुओं को आहार नहीं लेना, उसके घर की अग्नि व जल से जिनपूजा नहीं करनी ।

२ सूतक के पास सोनेवाले को ३ दिन पूजा नहीं करना ।

३ कथा लगानेवाले को देव, दर्शन व प्रतिक्रमणादि ३ दिन तक नहीं करना ।

४ सूतक को छुए हुए तो स्नान करने से शुद्ध हो सकते हैं ।

५ अन्य पुरुष जो सूतक को छुए हो तो मौलह ग्रह तक प्रतिक्रमणादि न करना ।

६ जिनके घर जन्म और मृत्यु का सूतक हो उन घर भोजन करनेवाले में १२ दिन तक जिनपूजन नहीं करना ।

७ कपड़े बदलनेवाले ८ ग्रह तक सूतक पाले ।

८ जन्म के दिवस ही मर जाय या विदेश में मर जाय अथवा साधु काल धर्म पाये तो स्नान करने से शुद्ध होता है ।

९ आठ वर्ष से कम उम्र का बालक मर जाय ८ दिन का सूतक ।

१० गाय आदि की मृत्यु हो तो घर से बाहर जाने के बाद १ दिन तक सूतक और अन्य त्रियेच कलेवर घर में पड़ा हो तो उसे बाहर ले जाय वहाँ सूतक, बाद में नहीं ।

११ दास दासी जो अपने आश्रय में और घर में रहे हों और उनको मृत्यु और जन्म हो जाय तो ३ दिन का सूतक ।

१२ जितने माम का गर्भ गिरे उतने दिन का सूतक ।

१३ विदेश गये हुए की मृत्यु सुने तो १ या २ दिन का सूतक ।

गोमूत्र में २४ प्रहर, भैंस मूत्र में १६ प्रहर, गाडर गधेडी व घोड़ी के मूत्र में ८ प्रहर और नर नारी के मूत्र में अन्तर्मुहूर्त पिठे सन्मूर्च्छिम जीव पैदा होते हैं ।

इति सूतक विचार ।

अस्वाध्याय दिवस ।

ऋतुवती स्त्री के तीन दिवस तक अस्वाध्याय, पिठे से गले तो वो ऋतु सम्बन्धी न हो परन्तु वो लोही फेरफार वर्णमाला होने से स्वाध्याय करना कल्पता है ।

पुत्र जन्मे तो ७ दिवस तक अस्वाध्याय, और पुत्री जन्म तो वह लोहीमाली होने से ८ दिवस तक अस्वाध्याय ।



१ निशीथ सूत्र के सोलहवा उद्देशा में जन्म मरण सूतक का घर दुर्गधनिक कहा है ।

जाकर के गुरु महाराज का व्याख्यान सुनना नहीं तो दिवस में एक वरत भगलिक भी सुनना और दान देना ।

९ प्रश्न-अभक्ष्य किमको कहते हैं ?

उत्तर-न खाने योग्य चीजों को अभक्ष्य कहते हैं । वह मक्खन, आदि चारीश प्रकार के हैं ।

१० प्रश्न-विदल किमको को कहते हैं ?

उत्तर-जिम अन्न की दो टाल (डिटल) हो जाय, और जिमसे से तेल नहीं निकले उस अन्न को कच्चे दूध, दही, छाश के साथ अथवा मिलाय के खाना बड़ा दोष कहा है, दही वगैरह खूब गरम करके साथ खाने में विदल का दोष नहीं है ।

नोट-उत्तम प्रकार के अनन्त फाय, और चाबीस प्रकार के अभक्ष्य श्रावक को त्याग करना चाहिये, जो जीव कन्द-मूल खाते हैं वो जीव पापसे भारी होकर भगभव में बहुत दुःख पाते हैं इसी कारण श्रावक को त्याग करना उचित है ।

सर्वसिद्धिमंत्र ।

ॐ अरिहन्त मिद्ध आयरिय उरज्झाय मव्वमाहू, सव्व-धम्मतिथयराण, ॐ नमो भगवइए, सुयदेवयाए, सतिदेव-याण मव्वपयणदेवाण, पञ्च लोगपालाण, ॐ ह्रीं अरि-हन्तदेव नम ।

विधि—इम मंत्र को सिद्ध करने के लिये देवस्थान या किसी और जगह शुद्ध देख कर बैठना चाहिए, सर्व सिद्धि का भंडार है। कठिन कार्य के समय विधि सहित जाप करने से कष्ट मिटता है, और मात वार मंत्र बोलकर वस्त्र के गाँठ लगाता जाय तो तत्काल चमत्कार उत्पत्ता है। व्याघ्रादि हिंसक प्राणी या अन्य प्रकार का भय उपस्थित हुआ हो तो नष्ट होजाता है।

श्रीप्राप्ति महाविद्या ।

“ तीर्थंकरगणधरप्रमादात् एष योगः फलतु ” ऐसा कहकर बादमे “ ॐ ह्रीं वीयत्रुद्धिण, ॐ ह्रीं कुठबुद्धिण, ॐ ह्रीं सभिन्न सोयाण ॐ ह्रीं अरुखीणमहाणसलद्धिण सच्चलद्धिण नमः स्वाहा । ”

विधि—इस महाविद्या मंत्र की सिद्धि के लिए—अष्टम, याने तीन दिन तक उपवास में रहकर साढ़ा चारह हजार बार जाप करना चाहिए। यदि उपवास न बन सके तो दूध, शक्कर, घी, चावल और रोटी एक बार खाकर, गर्म पानी पीवे। इस मंत्र का जाप करते समय पीला वस्त्र, पीला आसन तथा पीली माला रखनी चाहिए। साढ़ा चारह हजार बार जाप करलेने पर, बाद में हमेशा १०८ बार जाप करना, जिससे धन-सम्पत्ति और पुत्र-परिवार तथा अच्छी आजीविका मिलती रहे।

सरस्वती महाविद्या ।

“ तीर्थंकर गणधर प्रसादात् एष योगः फलतु ” एमा कहकर फिर “ ॐ ह्रीं चउदसपुत्रिण, ॐ ह्रीं पयाणुमारिण, ॐ ह्रीं एगारसगधारिण, ॐ ह्रीं उज्जुमइण, ॐ ह्रीं त्रिपुल-मइण स्वाहा । ”

विधि—इस मंत्र का जाप हमेशा ७ महिने तक १०८ वार जाप करत रहना चाहिए, जिससे बुद्धि तीव्र होवे, यादशक्ति बढ़े, जैसी २ विद्या सिखने की इच्छा करे वे घट्टत जल्दी प्राप्त होव, तथा सभा में व्याख्यान देने की शक्ति बढ़ जावे ।

रोगक्षय मन्त्र ।

ॐ नमो सव्योसहिपत्ताण, ॐ नमो खेलोसहिपत्ताण,
ॐ नमो जह्लोसहिपत्ताण, ॐ नमो सव्योसहिपत्ताण स्वाहा

विधि—इस मंत्र के जाप से रोगपीड़ा मिटती है व्याधि दिन दिन कम होगी, एक माला सवेरे ही फेरना चाहिए ।

भूत-प्रेत निवारण मन्त्र ।

“ श्री माणिभद्र देवप्रसादात् एष योगः फलतु ” एमा कहकर “ ॐ नमो भगवते माणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्ण रूपाय, चतुर्भुजाय, जिनशासनभक्ताय, नवनागसहस्रबलाय ”

किन्नर-किंपुरुष-गधर्व-यक्षराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-मर्व-
शाकिनीना निग्रह कुरु कुरु स्वाहा, पात्र रक्ष रक्ष स्वाहा ।”

विधि—धूप दीप सहित (रखकर) इस मंत्र को साढ़े
चारह हजार बार जाप करने से मिद्ध होता है । मंत्रसिद्धि
समय ब्रह्मचर्य पालन करना, भूमि पर सोना, एक वक्त
भोजन करना, सत्य वचन बोलना, तथा शुद्ध आचार रखना
चाहिए । बाद में जरूरत पड़ने पर १०८ बार जल को मंत्र-
कर पीलाने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी आदि का कष्ट
दूर हट जाता है ।

ॐ ह्रीं श्रीं अहं गौतम मम व्यवमाये ऋद्धि सिद्धि
कुरु २ स्वाहा । १०८ बार प्रतिदिन गुणीए । लक्ष्मी दासी
के समान वश होय और सुख-संपत्ति मळे ।



नमो ऽम श्रीगुरुनेमिसूरये ॥

आचार्यविजयामृतसूरिविरचित

अथ श्री वैराग्यशतकम् ।

— ७७ —

(सवेया-वर गया ने वर गया—११ राग)

श्री आदीश्वर शान्ति जिनेश्वर नेमि प्रभु ने पाम जिणन्द,
वीर प्रभु ए पाच प्रभुने छट्टा श्रीगुरु नेमिसूरीन्द ।

ए सर्वने प्रणये प्रणमी समरी सरस्वती मात उदार,
रखु 'वैराग्यशतक' आ सुख कर प्राचीन उक्तिने अनुमार ॥१॥

बहु काले बहुनिध दु ख महता धर्मक्रिया रुगानो काल,
नरभवरूप प्राप्त थयो छे पुण्य प्रचयधी चेतन हार ।

अल्पकाल स्थायी सुखदायी सुर गमकिर्ता जेहने च्हाय,
दश दृष्टान्ते दुर्लभ एने हारी जईन जन पम्ताय ॥ २ ॥

[मनुष्यभधनी दुर्लभता]

भरतक्षेत्रमा घर घर भोजन ब्राह्मणने आपे चक्रीश,
चौमठ सहस अन्तेउरी जस नरपति सेवे सहम बनीश ।

दैवयोगधी एक घर ते बीजी बरुते जमना जाय,
पण सुकृत विण गत नरभव ते पाछो चेतन नहिज पमाय ॥३॥

भरतक्षेत्रना सर्प धान्यनी देवे कीधी ढगली एक,
 तेमा पाली सरसव नांखी लाव्यो डोशी वृद्ध ज छेक ।
 ते वृद्धाधी कदाच सरसत्र मर्ष धान्ययी भिन्न कराय ॥पण०॥४॥
 देवी घूतकलाधी जिती श्रीमतोने वारवार,
 जे चाणम्ये चन्द्रगुप्त नृपनो भरपूर भयो भण्डार ।
 मानी ले केते मत्री ते वणिक जनोधी पण जीताय ॥पण०॥५॥
 एक हजार ने आठ स्तम्भनी शाला स्तम्भे स्तम्भे हाम,
 अष्टोत्तर शत हार्या विण ते मर्व जीतया नृपनी पास ।
 ए घटनाधी जीती जनकने राजपुत्र पण राजा थाय ॥पण०॥६॥
 दूर देशगामी वणिकोने श्रेष्ठिसुतोए आप्या रत्न,
 पितृवचनधी पश्चात्तापे तेज रत्न मेलयया यत्न ।
 करता कोई दिन मर्ष रत्नधी जनक हृदय पण सतोपाय ॥पण०॥७॥
 पूर्ण शशीने स्वप्ने देखी राजपुत्र ने रक विशेष,
 निर्येक विकल लहे रक क्षीरने नृपमुत पाम्यो राज्य विशेष ।
 एज मटे सूता स्वप्नामा तेने पूर्णनेन्दु य जणाय ॥पण०॥८॥
 राधाना मुख नीचे चक्रो मबला अगला फरता चार,
 तैल कटाहीमा प्रतिबिम्ब निरखता ऊमो राजकुमार ।
 ते राधानु वाम नेत्र ते चपल गीरधी पण वींधाय ॥पण०॥९॥
 कच्छप देखी पूर्ण चन्द्रने द्रहमा दूर धये सेगाल,
 आनदे ए जोणु जीवा लडने आव्यो निज परिवार ।
 मली गये सेगाल सुधाकर कच्छपधी य कटी निरखाया ॥पण०॥१०॥

पूर्व पयोधिमाहे समोलने धोंमरी पश्चिम जलधिमाय,
 दुर्धर कल्लोले खँचता कोईक समये भेगा थाय,
 चली समोल स्वय ए युगना विवर विपे पण पेसी जाय ॥पण०॥
 कोई कुतुहली देवमणिमय स्तभनु चूर्ण करीने जाय,
 भेरुशिरे ए चण नलीमां नासी सर्व दिशा विग्वराय ।
 ए अणुओने वीणी वीणी ढवे पालो स्तम कराय ॥पण०॥१२॥
 ऊगे सूरज पश्चिममा ने पूर्व दिशामा अस्त ज थाय,
 सागर मयादा मूके ने सिंह कदी खडने पण ग्वाय ।
 चन्द्रथकी अगार झरेने वासीद मापेलु जाय ॥पण०॥१३॥
 (वैरायशतक से उद्धृत)

सज्जाय ।

महजानदी रे आतमा, सृतो काइ निश्चित रे,
 मोक्षतणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवत रे,
 द्दट जगतना तत रे, नासी वाक अत्यत र,
 नरकायाम ठवत र, कोई वीरला उगरत रे ॥ म० ॥ १ ॥
 रागद्वेष परिणती भमी, माया रूपट कराय रे,
 काशकुसुम परे जीवडो, फोगट जनम गमाय रे,
 माये भय जमराय र, शो मन गमे धराय रे,
 सहु एक मार्ग जाय रे, कोण जग अमर कहाय र ॥म०॥२॥
 रावण सरिखा रे गजवी, नागा चान्या विण धाग रे,
 दश माथा रण रडवटघा, चाच दिये शिर काग रे,

देव गया सवि भाग रे, न रह्यो मानने छाग रे,
 हरि हाथे हरि नाग रे, जोज्यो भाईयोना राग रे ॥स०॥३॥
 केई चाल्या केई चालशे, केता चालणहार रे,
 मारग रहेतो रे नित्य प्रत्ये, जाता लग्न हजार रे;
 देश विदेश सुधार रे, ते नर एणे ससार रे,
 जोता जम दरवार रे, न जुगो वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥
 नारायणपुरी द्वारिका, बलती भेली निराश रे,
 रोता गणमा एकला, नाठा देव आकाश रे,
 किहा तरु छाया आवास रे, जल जल करी गयो माम रे,
 बलभद्र सगेवर पाम रे, सुणी पाण्डव शिव वाम रे ॥स०॥५॥
 राजी गाजी रे बोलता, करता हुकूम हेरान रे,
 पोढ्या अग्निमा एकला, काया राख समान रे,
 प्रबद्ध नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे,
 जेजु पीपल पान रे, मधगे झूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥
 वालेसर विना एक घडी, नत्रि सोहातु लगार रे,
 ते विण जनमारी वही गयो, नहीं कागल ममाचार रे,
 नहीं कोई कोईनी ससार रे, स्वारथीयो परिहार रे,
 माता मरुदेयी सार रे, पहोत्या मोक्ष मोझार रे ॥स०॥७॥
 मातापिता सुत बाधना, अधिको राग विचार रे,
 नारी अमारी रे चित्तमा, बछे त्रिपय गमार रे,
 जुओ सूरिकता जे नार रे, त्रिप दीधो भरतार रे,
 नृप जिम धर्म आधार रे, सजन नेह निहार रे ॥ सहजा० ॥९॥

हसी हसी देवा रे तालीओ, सग्या कुसुमनी सार रे,
ते नर अते मार्टी यया, लोऊ चणे घरवार रे;
घडता पात्र कुभार रे, एहट्टु जाणी अमार रे,
छोडो त्रिपय त्रिकार रे, धन्य तेहनो अरतार रे ॥सहजा० ॥१०॥

थात्रचा सुत परित्रया, मली एलायची कुभार रे,
धिम् धिक् विपया रे जीवने, लई तैराग्य रसाल रे,
मेली मोह जजाल र, घेर रमे केवल बाल रे,
धन्य करकडू भूपाल र ॥ सहजा० ॥ १० ॥

श्री " शुभविजय " सुगुरु लही, धर्मरयण धरो छेक रे,
वीर वचन रम शेलही, चारो चतुर त्रिकर र,
न गमे ने नर भेरु र, धरता धर्मनो टेक रे,
भयजल तरिया अनेक रे ॥ सहजा० ॥ ११ ॥

शिग्यामणनी सज्जाय ।

गरभागासमा चितवे रे, हवे न करशु म पाप,
जब जायो तब विमयो रे, माळ्यो माळ्यो घणा रे सताप के,
सुण रे चचल जीवडा रे ।
तु तो परभव केशो लही शके, सुण रे चचल जीवडा रे ॥ए टेका॥१॥
जो नवकार गणाचीए तो नयणे निंद भराय,
नाटक चेटक निरखता तो जाय जाय रमणी विहाय के,
सुण रे चचल जीवडा रे ॥ २ ॥

जो मामायक कराविये तो, लागे वार अपार,
वातो साथे जो मिले तो, करे करे पहोर वे चार के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ३ ॥

ऊमे ऊडस्मग्ग करागीए तो, कहे दुःखे मोरा पाय,
माय पीटक मूकीए तो, दोडथो दोडथो मारग जाय के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ४ ॥

जो उपवाम करावीए तो, लागे भूख अपार,
लेणा कारण रोक्रीए तो, लाधे लाधे दो दिन चार के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ५ ॥

धर्मने कामे मागीए तो, एक बदाम न दय,
राजरु दैयरु रोक्री ल्ये तो, खूणे वेसी गणी दैय के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ६ ॥

लोमने वश थई प्राणीयो रे, मेले घणे री रे आथ,
दान सुपात्रे देयता तो, धर धर धुजे छे हाय के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ७ ॥

घ्रण तच्च आराधोये तो, जपीये थी नयकार,
स्तीमाविजय गुण आणीये तो, पहुँते मुक्ति मज्झार के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ।

तु तो परमन केशो लहीश के, सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ८ ॥

श्री कलियुगनी मञ्जुशाय ।

मरस्वती स्वामिनी पाय नमीने, उलट मनमाहे आयो,
 तीरथ नहि कोई इण समारे, तेणे ए कलियुग आयो,
 देखो वेचारो कुडो कलियुग आयो ॥ ए आरुढी ॥
 बावो कहे म्हारी न्हानडी वेटी, दिन २ मूल्य मवायो,
 वेचारो कलियुग आयो ॥ १ ॥
 राजा तो परजाने पीडे, कुनर काम भलायो,
 बोल बघ नहीं मीने, गोचर खेत्र खेढायो ॥ वे० ॥ २ ॥
 गुरुने गाल दीय निज चेलो, वेद पुराण पढायो,
 मासु चूले ने उहु खाटलडे, फुके शरीर जलायो ॥ वे० ॥ ३ ॥
 अंशी वर्पनो हींड होशे, मूँछे हाथ घलायो,
 पचतणी साखी परणीने, अबला अर्थ गमायो ॥ वे० ॥ ४ ॥
 जोगी जगम ने सन्यासी भाग भरे मद व्हायो,
 चोर चाड पग्धनने खाये, माधु जन सीदायो ॥ वे० ॥ ५ ॥
 निर्धनन उहु वेटा वेटी, धनवत एक न पायो,
 नीन तणे घर अति धणी लक्ष्मी, उत्तम जन मीदायो ॥ वे० ॥ ६ ॥
 न मले बाप सघाथ वेटो, घणे र मनोरथे जायो,
 हाथ उपाडे मायने मारे, परणी शु उमाह्यो ॥ वे० ॥ ७ ॥
 घरदाने घेलो कहे वेटो, आपतणो मद वाह्यो,
 वहु सती ने बर हींडोले, सामरे सुगाने धरायो ॥ वे० ॥ ८ ॥

हल खेडे घ्राहण गो जुत्ति, निर्दय नाक फडायो,
मा बापे वेटी बेचीने, वेटाने परणायो ॥ वे० ॥ ९ ॥

रागतणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे पराया,
कागानी परे कलहो माडी, कुलगुरु नाम घराया ॥वे०॥१०॥

बैयर वार वरमनी वेटो, दीठो गोद खेलायो,
माग्या मेह न वरसे महीयल, लोमे धरुयो सवायो ॥११॥

कूडा कलियुग ए माया, देखी गीत गवायो;
पभणे "प्रीतप्रिमल" परमारथ, जिनरचने सुख पायो ॥१२॥

जबूकुमार की सज्ज्ञाय ॥

मरस्वती स्वामिनीने विनवु-सतगुरु लागुजी पाय,
गुणरे गाशु जबूस्नामीना, हरख धरी मन मॉय,
धन धन जबूस्नामिने ॥ १ ॥

चारित्र छे वच्छ दोही(लु), व्रत छे खाडानी धार,
पाये अणवणेजी चालवुं, करवाजी उग्र विहार ॥धन॥२॥

मध्यान (पठी) करवी गोचरी, दिनकर तपे ललाट,
वेलु कजलमम कोलीया, ते किम वालिया जाय रे ॥धन॥३॥

कोडी नराणु सोवनतणी, तमारे छे आठे जीनार,
ससारतणा सुख सुण्या नहीं, भोगवो भोग उदार ॥धन॥४॥

राम-सीता वियोगडो, बहोत किया रे सग्राम,
छती रे नारी तुमे काई तजो, तजो धनधाम ॥धन॥५॥

परणीने शु परिहरो, हाथ मन्यानी सचध,
 पट्टी त करशो म्यामी ओरतो, जेम कीधो मघ मुणिद ।धना६।
 जबू कहे नारी सुणो, अम मन सयम माय;
 साचो स्नेह करी लेखवो, तो सयम ल्यो अम माथ ॥धना७॥
 तेणे समये प्रमवोजी आव्यो, पाचशे चोर सघात,
 तेणे पण जबूस्वामी ए बुझव्यो,—बुझव्या
 मात ने तात ॥धना८॥ सासु ममराने बुझव्या;
 बुझयी आठनी नार, पाचशे मत्तारीश शु लीधोनी सयम गार ।९।
 सुधर्मास्वामी पासे आव्या, पिचरे छे मनउल्लाम;
 कर्म खपायीने केप्रल पामीया, पोहव्या मुक्ति मोझार
 धन धन जबूम्यामीन ॥ १० ॥

अन्यत्र सपघनी सज्ज्ञाय ।

केहना रे सगपण कहनी माया, कहना मजन मगाई रे
 सजन वर्ग कोइ साध न आवे, आप आप कमाई र ॥ क० ॥१॥
 माहरु माहरु महु कह प्राणी, ताहरु कुण सहाई रे ?
 आप स्वारथ सहुने वहालो, कुण सजन कुण माड र ? के० ॥२॥
 चुलणी उदरे ब्रह्मदत्त आव्यो, जुओ मात मगाई रे,
 पुत्र मारणने जग्गिज कीधी, लाखनु घर नीपजारी र ॥के०॥३॥
 काष्ट पजर घाली मार, शस्त्र ग्रही दोड घाइ र,
 कोणिके निज तात ज हणीयो,
 तो किंहा रही पुत्र मगाई रे ?

क० ॥ ४ ॥

भक्त बाहुबल आपे लडीआ, आप आपे मज्जन थड रे;
चार बरम संग्राम ज करीओ,
तो किहा रही भ्रात-भगार्द रे ? के० ॥ ५ ॥

गुरु उपदेस्यथी गय प्रदेशी, सुधु ममकित पाई रे,
स्वारथ त्रिण सुरिकता नारी, मार्यो पीयु विप पाइ रे ॥ के० ॥ ६ ॥

निज अगजना अगज छेद, जुओ राटु केतु रुमाई रे,
महु महुने निज स्वार्थ ब्हालो, कुण गुरुने कुण माइ रे ? के० ॥ ७ ॥

सुभूम फरसुराम ज दोय, माहोमाहे वेढ चनाइ रे,
क्रोध करीने नरके पोहोता,
तो किहा रही तात सगाइ रे ? के० ॥ ८ ॥

चाणाक्ये तो पर्वत साधे, कीधी मित्र ठगाई रे,
मरण पामी ते मनमा हरख्यो,
तो किहा रही मित्र सगाई रे ? के० ॥ ९ ॥

आप स्वार्थ महुने ब्हाला, कुण सज्जन कुण माइ रे,
जम राजानो तेडो आन्यो, टगमग जोवे भाइ रे ॥ के० ॥ १० ॥

माचो श्री जिनधर्म मखाइ, आराधो लय लाइ रे,
देवप्रिजय कवि शिशुनो डणी परे,
सत्प्रिजय सुखदाइ रे के० ॥ ११ ॥

वैराग्य पदनी मञ्ज्जाय

जीया सोच कुठ निज मनमे, तेग कौन है आ जगजनमे ॥ टिक० ॥
 तु माने में सबसे ऊँचा, फुला फिरता मगनमे ।
 कुरुर सुकर रामम अत्यज, सब कोइ ऊँच नगनमें ॥ जिया० ॥ १ ॥
 ऊपर से बन ठन के मुखड़ा, देखत है दरपन में ।
 अदर गद भरा कमों का, धूर परी तुम तन म ॥ जि० ॥ २ ॥
 हूँ मैं क्या मुज क्या करनी है, मोच नहीं एक खिनम ।
 दौलत औरत खातिरदारी, लाग रही गीगन म ॥ जि० ॥ ३ ॥
 धनपति निर्धन ठाकर चाकर, ऊँच नीच सब जगम ।
 मियाकी राक बने मिट्टीम, हिन्दुकी रास अगनमे ॥ जि० ॥ ४ ॥
 गुप्ततन और गमत रमत म, निर्लज बन बचपन म ।
 चटक मटक बमिया बस परक, खोइ उमर जोवनम ॥ जि० ॥ ५ ॥
 अब क्या होवे बन गये बुटे, धरली लाठी करननम ।
 बोलनकी मुखमे चलनकी, ताकत रही नहीं चरणमें ॥ जि० ॥ ६ ॥
 मात तात सुत द्वारा बधु, देत मदद मरननमें ।
 परकी खातर अपना चूके, थिक थिक तुज ममज्ञनम ॥ जि० ॥ ७ ॥
 अखिर काम नाम प्रभु आवे, चेतन चेत स्मरनमे ।
 आतम लक्ष्मी दर्प अनुपम, बल्लभ प्रभुक भजनमे ॥ जि० ॥ ८ ॥

(राग-गु बहुत खनी मारी राज०)

करी ल्यो धर्म हितकारी भत्रिक तुमे,
करी ल्यो धर्म हितकारी ॥ अचली ॥

आ समार मार न दीसे, दीसे अमारता भारी ।
जन्म मरण दुःख डुगर माहे,
भटकृत दुनिया प्रिचारी ॥ भत्रिक० ॥ १ ॥

ताती सुई जिम गेम रोमे म, कोई मनुष्य ने चुमारी ।
तेथी आठगणु दुःख होवे, जन्म ममयना मोझारी
॥ भविक० ॥ २ ॥

कोड विळीं करडे एक सायं, तम मरण दुःखकारी ।
कोड प्रदेशे जग नहीं खाली, जन्म मरण ज्या न धारी
॥ भविक० ॥ ३ ॥

रग छे पतग जेम आ तन तरो, विणसी जशे क्षण वारी ।
दारा सुता सुत धन घर छोडी, जाता बनीश लाचारी
॥ भत्रिक० ॥ ४ ॥

राजा गया महाराजा गया ने, गया छे इन्द्र मोरारी ।
अचानक एक दिवसे उपडु, आत्रशे तारी पण वारी
॥ भविक० ॥ ५ ॥

विषय विकारनी निद्रा लेतां, दिठी न सुखनी गारी ।
अनत भत्र भटकीने पाय्यो, सुदर नर अचतारी ॥ भत्रिक० ॥ ६ ॥

पामी समय नहीं वृथा खोमो, करी ल्यो जन्म सुधारी ।
छरि कमल चरणनो सेरक, लब्धि कह छे पोकारी ॥ भवि० ॥ ७ ॥

श्री पर्युपणापर्व का स्तवन ।

(राम-मिद्वानलना वासी जिनने कोडो कल्याण)

पर्व पर्युपण आब्या जाणी आनन्द अपार ॥ ८८ ॥

श्री मुखसे प्रभु महावीर भारे, पीस्तालीम आगमनी माखे ।
महिमा अपरपार ॥ जाणी ॥ १ ॥

पर्व माही पर्युपणा मोटो, इमस है सहु पत्र छोटो ।
कल्पसूत्र मोझार ॥ जाणी ॥ २ ॥

महा पुराय तुम पर्याये पामी, भक्तिमां नहीं राखे स्वामी ।
कहतु हूँ बारवार ॥ जाणी ॥ ३ ॥

जाठ दिवम कामोच्छव कीजे, नरभय केरो लाहो लीने ।
पूजा कगे उदार ॥ जाणी ॥ ४ ॥

गान तान करी गगन गर्जायो, नाद वाजीरण को नित्य बजावो ।
तप करो सुखकार ॥ जाणी ॥ ५ ॥

आत्मकमल म लब्धि वसावो, जयत का महु कर्म निसावो ।
होवे बेंडा पार ॥ जाणी ॥ ६ ॥

श्री महावीरस्वामी का जन्म पालना गीत ।

(राग-जय जयवन्ती)

- पालणो झुलत प्रभु वीर जिणद,
झुलायो श्री त्रिशलामैया ॥ पालणो ॥ १ ॥
- रत्नरुनरुमय पालणु सोह,
मगल गात्रे मय देव देवैया ॥ पालणो ॥ २ ॥
- मोर मैना और पुतली जडिंटा,
गीत गावत तिहा किरर गैया ॥ पालणा ॥ ३ ॥
- रण ज्ञान के धारी जिनेश्वर,
जग माया मे नाही नचैया ॥ पालणो ॥ ४ ॥
- भर यौवन मे सयम पाये,
रमा रमणी का स्नेह हरैया ॥ पालणो ॥ ५ ॥
- आरम कमल मे लब्धि ध्यावे,
धन्य हो जिनेश्वर शिवमैया ॥ पालणो ॥ ६ ॥

श्री महावीरस्वामी स्तवन ।

(राग-दम भी महावीर के निपाही योग)

- आफे वीर प्रभु के द्वार गवड़ा,
रत्नचिंतामणि मेरी नजरे चढ़ा ।

घर्द्धमान जिनेश्वर नाम चढ़ा,

लेने मुक्ति को मैं तेर चरणें पढा ।

गुलकू कूलबूल ज्यु गुण गहूँ,

मुवाङ्क मुचारक मुँह से रुहूँ ॥ आरु० ॥ १

तरा झौहर गुणों का है चमक रहा,

तेरे दरम को तरम ग्ही है जहाँ ।

आफताब हो ! अधेर मेरा हरो,

मेरा जल्दी ही मत्र से किनारा करो ॥ आके० ॥ २

तेरी बाणी सुनी मेरा काम हुवा,

अब दुष्ट कर्म बदनाम हुआ ।

तेरे ध्यान से मेरी बदल गई दशा,

प्रभु तूँही तूँही है नयन में बसा ॥ आरु० ॥ ३

गुण तरे हमरे दिलों में रह,

तेर हुकूम का झण्डा मदा शिर बह ।

तेरा शासन चाद चकोर मना,

इमसे आनद आनद खूब बना ॥ आके० ॥ ४

गुण गान तेरा सुधापान किया,

मानु अजरामर पद अब ही लिया ।

मेरे आतम कमल मे विराज रहो,

सूरि लब्धि के चित्त म भक्ति रहो ॥ आके० ॥ ५



